ISSN 2349-6614

मई-जून-जुलाई 2021

मूल्य 50 रु

# प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

## मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के प्रबंध कौशल से कोरोना की दूसरी लहर पर भी राजस्थान की जीत

जन कल्याण के अनेक संवेदनशील फैसले

राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रावि विश्वविद्यालय की बनाई पहचान

कर्नल (प्रो.) एस.एस. सारंगदेवोत तीसरी बार कुलपति मनोनीत

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 19 अंक 1–3, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-23 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI NO. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur

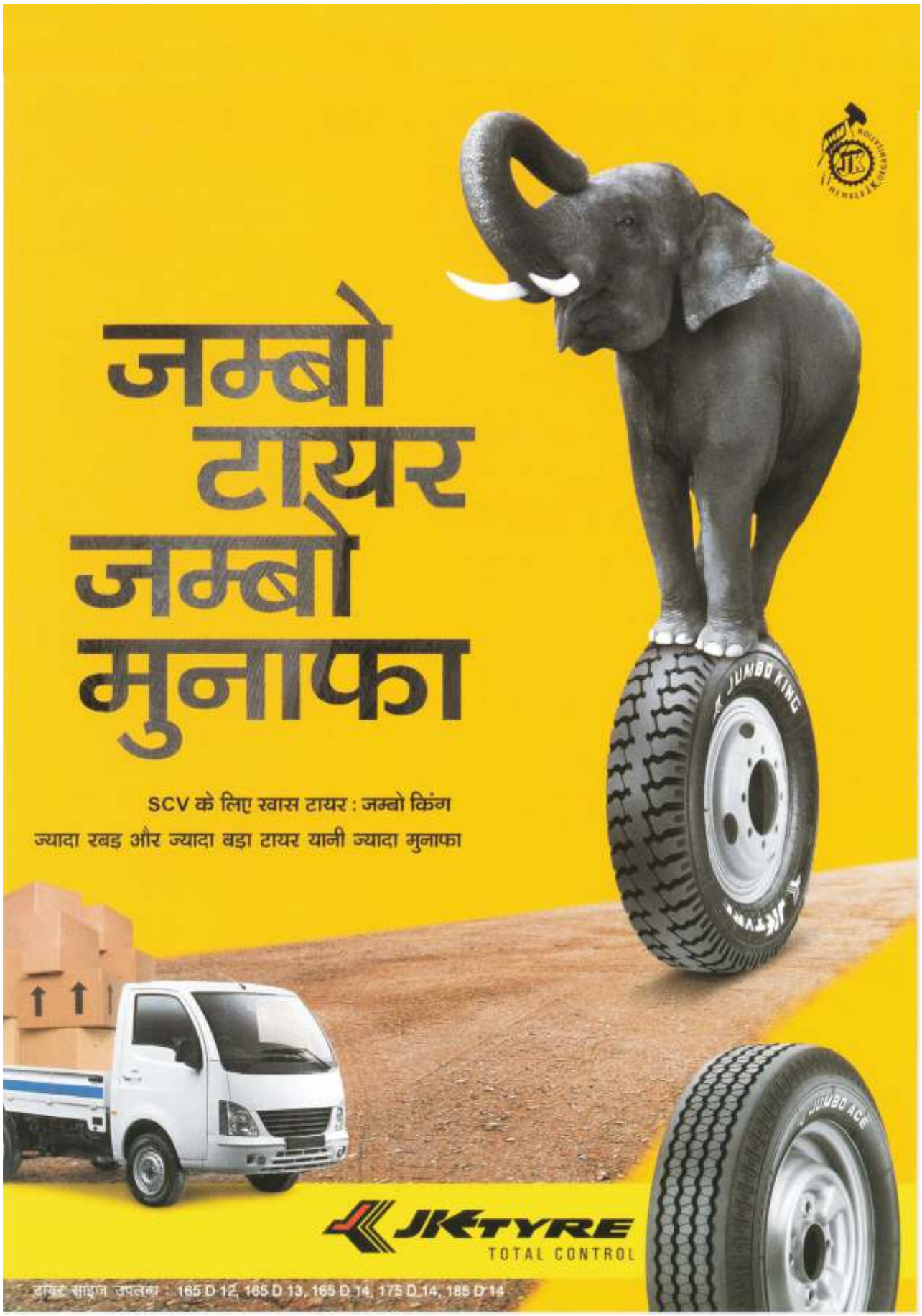
जम्बो टायर जम्बो मुनाफा
SCV के लिए खास टायर : जम्बो किंग
ज्यादा रबड़ और ज्यादा बड़ा टायर यानी ज्यादा मुनाफा
JUMBO KING
JUMBO ACE
JKTYRE
TOTAL CONTROL
टायर साइज उपलब्ध : 165 D 12, 165 D 13, 165 D 14, 175 D 14, 185 D 14

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण


प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर मदन, भूमिका, उषा चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs विकास सुहालका



सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डागी
कुलदीप इन्दौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत



वीक रिपोर्टर : उमेश शर्मा

**जिला संवाददाता**

बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान



प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001



मई-जून-जुलाई 2021 वर्ष 19, अंक 1-3

# प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू


## अंदर के पृष्ठों पर...


**जल-जीवन**

जलाशय संरक्षण मौजूदा दौर की महती ज़रूरत
12

**अनुसंधान**

हिन्द महासागर में 'जीनोम मैपिंग'
16

**संस्कृति**

रथ चढ़ि आए जगन्नाथ
26-27

**किलकारी**

नई पद्धतियों से आईवीएफ में बढ़ी सफलता की दर
30

**शेष-विशेष**

दुनिया में 38 लाख से ज्यादा लोग मौत के शिकार
38


## सूचना

कोरोना दूसरी लहर में लॉकडाउन के चलते 'प्रत्यूष' के माह मई व जून 2021 के अंक प्रकाशित नहीं हो पाए। तदर्थ जुलाई का अंक मई, जून व जुलाई के संयुक्तांक के रूप में प्रेषित किया जा रहा है। कृपया स्वीकार करें। असुविधा के लिए हमें खेद है।

– प्रबंध सम्पादक


कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्स: 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com



स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोनाइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

Register Today!

# PASSION

## The MultiArt Studio

Both Online & Offline Classes!

## Services Offered

**Classes For**

- Vocal (Singing)
- Instrumental
- Dance
- Zumba
- Yoga
- Aerobics
- Art & Craft (Sketching, Painting, Drawing, Calligraphy, Mandala etc.)

Auditorium for Conferences Events

Professional Choreography for Events

## Unique Features

- Udaipur's First Center with multiple arts under one roof
- Center for Family time-Each Family member can join same or different classes at one common time
- Personal training available
- Safe and soothing environment
- Professional Instructors
- Launching offers/discounts available
- Located in heart of city
- Regular and weekend batches with limited batch size

*Art with a PASSION is unstoppable... Chase your desire!!*

**Call For Registration & Enquiries**

**+91-9340610230, +91-8696029999**

Email: passion@mogragroup.com

Find us on: fb - @passionmultiartstudio

**Address**

Passion - The MultiArt Studio, "A-Square", 2nd Floor,
1-Shobhagpura, 100 Feet Road, Udaipur (Raj.)

Note: We Are Following All Precautionary Measures For Covid-19 & Proper Sanitisation

# कोरोना : जंग जीतने का संकल्प

**कोरोना** की दूसरी लहर में संक्रमण जिस तेजी से बढ़ा वह चिंताजनक तो था ही, लेकिन इससे भी ज्यादा विकट समस्या यह थी कि देश की राजधानी से लेकर ब्लॉक के अस्पतालों-स्वास्थ्य केन्द्रों के बड़ी संख्या में स्वास्थ्यकर्मी इसकी चपेट में आए। देश के सभी अस्पतालों-स्वास्थ्य केन्द्रों में पहले से ज्यादा बेड बढ़ाए गए। रोजाना एक लाख से ज्यादा संक्रमितों का आंकड़ा डर पैदा कर रहा था। सरकारी और निजी अस्पतालों पर भारी दबाव रहा। कई अस्पतालों को केवल कोविड उपचार केन्द्र के रूप में ही तब्दील कर दिया गया। मरीजों के साथ चिकित्साकर्मी व अन्य फ्रंट लाइन कर्मचारियों को किस हद तक और कैसे सुरक्षित रखें, यह बड़ी चुनौती थी। मौत का आंकड़ा भी दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा था। बावजूद इसके हालात पर काबू पाया गया। बाजार खुले हैं, चहल-पहल बढ़ी है। परस्पर विश्वास और सद्भाव से ही समस्या से निजात पाने की बुनियाद तैयार होती है। ऐसी कोई आपदा, संकट या परिस्थिति नहीं, जिससे मानवता न जीती हो। वह समय हम सबकी परीक्षा का भी था और आगे भी है। सब एक-दूसरे का ख्याल रखते हुए मिल कर चलें। वह दिन भी आएगा जब यह जंग हम जीत चुके होंगे।

लॉकडाउन में एक-दूसरे की खोज ख़बर और सहायता के लिए हाथ बढ़ते रहे। इससे उन लोगों को हौसला मिला जिन्हें पुन: पलायन की आशंका सता रही थी। सरकार और निजी क्षेत्र ने उन्हें ज़ोरदार तरीके से आश्वस्त किया कि उन्हें हर हाल में बदहाली से बचाया जाएगा। उनका व उनके परिवार का खयाल रखा जाएगा। उनकी दैनन्दिन मज़दूरी की भरपाई की जाएगी। पिछले वर्ष सवा दो माह के लम्बे लॉकडाउन ने देश की अर्थव्यवस्था को जर्जर करके रख दिया था। दूसरी लहर में अगर पुन: उसी अवस्था में जाना पड़ता तो हालात और खराब होते। इसलिए जहां तक संभव हुआ सम्पूर्ण लॉकडाउन से बचा गया, ऐहतियाती उपायों की पालना के लिए सख़्ती ज़रूर हुई। अब भी सबसे ज़्यादा ध्यान देने की ज़रूरत जिन राज्यों पर हैं, वे हैं - महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, पंजाब, मध्यप्रदेश, दिल्ली और राजस्थान। ये ऐसे राज्य हैं, जिन्हें केन्द्र को अधिकाधिक सहयोग व समर्थन की आवश्यकता है। केन्द्र सरकार ने मुफ्त टीके उपलब्ध कराने की राज्यों की मांग को मानकर एक बड़ा और सामयिक निर्णय लिया है। कुछ राज्यों विशेषकर राजस्थान में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने हर व्यक्ति और वर्ग की सहायता के लिए संवेदना और समर्पण के साथ काम किया और आर्थिक घोषणाएं की।

आज जो सवाल लोगों के मनोमस्तिष्क को मथ रहे हैं, उनमें एक यह भी है कि आखिर यह महामारी एकाएक पैदा कैसे हुई और तेजी से प्रसार कैसे हुआ? इस मामले में चीन पर उंगली उठी है, लेकिन विश्व स्वास्थ्य संगठन का जो दल पड़ताल के लिए चीन गया था, वह किसी पुख्ता जवाब के साथ नहीं लौटा है। कुछ आंकड़े समेट कर वह ज़रूर लाया, जो इस बात का संकेत मात्र है कि लाखों लोगों की मौत का कारण बने 'कोरोना' की खोज का अभी शुरुआती चरण भी पूरा नहीं हो पाया है, जबकि दो साल से यह भयावह रूप ले रहा है। जवाब खोजना बहुत ज़रूरी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन को इसकी जिम्मेदारी लेनी होगी। ताकि आने वाली पीढ़ियों को बचाया और सचेत किया जा सके। यह इसलिए भी ज़रूरी है कि कोरोना विषाणु के नए-नए स्वरूप भी संक्रमण को तेजी से फैलाने का कारण बन रहे हैं, जहां तक चीन का सवाल है, वह भी जांच में जुटे होने का संकेत तो दे रहा है, लेकिन विश्व स्वास्थ्य संगठन को उसने यह भी बता दिया है कि जांच लम्बे समय तक चल सकती है।

टीकाकरण अभियान चलाकर केन्द्र-राज्य सरकारें महामारी पर नियंत्रण की पूरी कोशिश कर रही हैं। जीवनरक्षक इंजेक्शन रेमडेसिविर के निर्यात पर पाबंदी लगाकर हर अस्पताल में उसकी उपलब्धता पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। विदेश निर्मित टीकों को भी मंजूरी दी गई है। टीकाकरण अभियान में भारत विश्व में अग्रणी है, किन्तु टीकाकरण इस महामारी का पुख्ता और स्थाई इलाज है, अभी यह भी तो सुनिश्चित नहीं हो पाया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुखिया ने आगाह किया है कि महामारी जल्दी नहीं जा रही है और इस जंग में वैक्सीन एक शक्तिशाली हथियार तो है, पर एकमात्र नहीं। ऐसी स्थिति में इससे बचाव का निर्धारित प्रोटोकॉल ही हमारा रक्षा कवच बन सकता है। हर नागरिक प्रोटोकॉल की पालना सही ढंग से करे, इसलिए यह भी ज़रूरी है कि उसे आम ज़रूरत की चीज़ें सहज सुलभ हों और कार्यस्थल पर भी पूरी सुविधाएं मिलें। ऑक्सीजन सिलेंडरों की कमी को पूरा करना, मौके का लाभ उठाने वाली दवा कम्पनियों, आम उपभोक्ता वस्तुओं के विक्रेताओं और निजी अस्पतालों पर कड़ी नजर भी आवश्यक है। दूसरी लहर में जिस तरह से मुनाफाखोरों ने पीड़ित मानवता के विरुद्ध आचरण किया, उसकी सामाजिक स्तर पर निंदा भी होनी चाहिए और दण्ड भी दिया जाना चाहिए, ताकि वे फिर कभी समाज विरोधी कार्य की हिम्मत न कर सकें। जिस तरीके से वायरस का प्रसार हुआ है, उसे देखते हुए तीसरी लहर की आशंका भी व्यक्त की जा रही है। उसके लिए हमें अभी से खामियों को दुरुस्त करते हुए तैयारी करनी होगी। हालांकि यह कब आएगी और कैसे इफेक्ट करेगी, यह कहना मुश्किल है। बहरहाल अपने आप में यह विश्वास जागृत करने की ज़रूरत है कि हौसले के हथियार से आज नहीं तो कल यह जंग हम जीतेंगे ही।

## बक्सर में नक्सली गतिविधियां

# चुनौती बना 'लाल गलियारा'

**तीन अप्रैल को छत्तीसगढ़ के बीजापुर-सुकुमा में मारे गए नक्सली हमले में 22 सुरक्षाकर्मी शहीद हो गए। साल 2021 में यह अब तक का सबसे बड़ा नक्सली हमला था। इसके साथ ही एक बार फिर नक्सली हिंसा और उसकी चुनौतियों को लेकर बहस छिड़ गई है।**

*दीपक रस्तोगी*

**बस्तर** के इलाके को 'लाल गलियारा' कहा जाता है। यह इलाका नक्सलियों का गढ़ होने के कारण सुरक्षा बलों के अभियानों में इसे केन्द्र माना जाता है। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से 305 किलोमीटर दूर दक्षिण में बस्तर जिला है। छह हजार से भी ज्यादा वर्ग किलोमीटर में फैले इस इलाके में लगभग दो हजार वर्ग किलोमीटर का इलाका नक्सलियों के कब्जे में है। प्रशासनिक कारणों से 1999 में इसमें से दो अलग जिले-कांकेर और दंतेवाड़ा बनाए गए। ये जिले भी नक्सल प्रभावित हैं।

### घना जंगल और राज्यों की सीमा

छत्तीसगढ़ का बस्तर डिवीजन घने जंगलों में लगभग 39 हजार वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। इसमें से 20 हजार वर्ग किलोमीटर से भी ज्यादा का इलाका नक्सलियों का प्रभाव वाला है। इस इलाके में पुलिस-प्रशासन की उपस्थिति नहीं के बराबर है। नक्सलियों के लिए सुरक्षित पनाहगाह होने के साथ-साथ यह इलाका अन्य राज्यों से लगा हुआ भी है - ओडिशा, महाराष्ट्र और आंध्रप्रदेश तक। नक्सली यहां वारदात को अंजाम देकर कार्रवाई से बचने के लिए दूसरे राज्यों का रुख कर लेते हैं। छत्तीसगढ़ के बीजापुर और सुकमा, राज्य के अंतिम छोर पर बसे इलाके हैं और इन्हीं दो जिलों की सरहद पर बसा हुआ है टेकलागुड़ा गांव, जहां मुठभेड़ हुई। असल में माओवादियों का गढ़ कहे जाने वाले इस इलाके में माओवादियों के बटालियन नंबर वन का दबदबा है। इस बटालियन के कमांडर माड़वी हिड़मा को लेकर कई किस्से हैं। 90 के दशक में माओवादी संगठन से जुड़े माडवी हिड़मा उर्फ संतोष उर्फ इंदमूल उर्फ पोड़ियाम भीमा उर्फ मनीष के बारे में कहा जाता है कि 2010 में ताड़मेटला में 76 जवानों की हत्या के बाद उसे संगठन में बड़ी जिम्मेदारी दी गई। इसके बाद झीरम घाटी का मास्टर माइंड भी इसी हिड़मा को बताया गया। इस पर 35 लाख रुपए का इनाम है।

### आदिवासियों में पैठ का सवाल

आदिवासियों के बीच पैठ बनाने के लिए नक्सलियों ने भ्रष्टाचार को हथियार बनाया। उनकी जन अदालतों का प्रभाव आदिवासी इलाकों में है। साथ ही नक्सलियों में बड़ी संख्या आदिवासियों की भी है। इस वजह से ग्रामीणों को मजबूरी में ही सही प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से नक्सलियों का सहयोग करना पड़ता है। आए दिन नक्सली मुखबिरी के शक में ग्रामीणों की हत्या करते रहते हैं। इस वजह से ग्रामीणों के बीच भय का माहौल है और वे सुरक्षाबलों का सहयोग करने से डरते हैं। अक्सर स्थानीय पुलिस और केन्द्रीय बलों-सीआरपीएफ आदि के बीच तालमेल की कमी का भी सवाल उठता है। किसी भी इलाके में तैनात केन्द्रीय बलों के जवान उस इलाके से उस कदर परिचित नहीं होते, जितना कि स्थनीय पुलिस। कई बार केन्द्रीय सुरक्षा बल के जवान स्थानीय पुलिस को साथ नहीं लेने के कारण नक्सलियों के जाल में फंस जाते हैं।

चुनौती नक्सलियों का तकनीक के मामले में आगे होना भी है। उनके हथियार आधुनिक है। हमलावर नक्सली देखने में गरीब लगते हैं, लेकिन इन्हें मदद पहुंचाने वालों का तंत्र बड़ा है। आला अधिकारियों का कहना है कि सरकार उनके तंत्र को तोड़ रही है और सुरक्षाबल नक्सलियों से सीधी लड़ाई कर उन्हें खत्म करने की कोशिश कर रहे हैं।

### विकास परियोजनाओं का विरोध

बस्तर इलाके में सड़क ओर संचार की सुविधा नहीं है। नक्सली यहां विकास कार्यों का विरोध करते रहे हैं। आए दिन सरकारी परियोजनाओं में लगी मशीनों को नक्सली जला देते हैं और ठेकेदारों की हत्या कर देते हैं। 2015 में सरकार ने दूरदराज के इलाकों के विकास कार्यों का जायजा लेने के लिए प्रगति प्रोजेक्ट शुरू किया

था। इसके तहत नए स्कूल, भवन, सड़कें बनी हैं। बरसों से जिन इलाकों में नक्सलियों का कब्जा था, वहां सड़क बन गई है, लेकिन नक्सली अक्सर सड़क और स्कूल को बम से उड़ा देते हैं।

हाल के मुठभेड़ से कुछ दिन पहले ही उस इलाके में सड़क का काफी बड़ा हिस्सा इन लोगों ने काट दिया था। तर्रेम, जहां पर यह मुठभेड़ हुई, वहां भी हाल ही में सुरक्षा बलों का शिविर बनाया गया था। इसके आगे एक सिलगेर जगह है, वहां भी नया शिविर बन रहा है। नए शिविर बनने से नक्सलियों में बौखलाहट दिखती है, क्योंकि शिविर बन जाने से वहां, सड़क, स्कूल या फिर बिजली पहुंचाने में दिक्कत नहीं होती। (जनसत्ता से साभार)

# यूं हुई राकेश्वर की रिहाई

**छत्तीसगढ़** के बीजापुर-सुकमा इलाके में तीन अप्रैल को सीआरपीएफ और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ के बाद एक कोबरा कमांडो राकेश्वर सिंह मिन्हास को नक्सली उग्रवादियों ने अगवा कर लिया था। उस मुठभेड़ में 22 जवान शहीद हुए थे।

पांच दिन के बाद कमांडो को नक्सलियों ने मध्यस्थों के प्रयास से छोड़ दिया। मध्यस्थों में

92 साल के बुजुर्ग धरमपाल सैनी भी थे। वे बस्तर में 'ताऊजी' के नाम से मशहूर हैं। उनके साथी जय रुद्र करे, आदिवासी समाज के बोरैया तेलम, सुकुमती हक्का और 7 पत्रकारों की टीम को पुलिस की ओर से नक्सलियों से बातचीत के लिए भेजा गया था। मूल रुप से मध्यप्रदेश के

धार जिले के रहने वाले धरमपाल सैनी, विनोबा भावे के शिष्य रहे हैं। 60 के दशक में सैनी ने अखबार में बस्तर की लड़कियों से जुड़ी एक खबर पढ़ी थी - दशहरे के मेले से लौटते वक्त कुछ लड़कियों के साथ कुछ लड़कों ने छेड़छाड़ की, फिर हाथ-पैर काटकर उनकी हत्या कर दी थी। सैनी ये खबर देखकर सोच में पड़ गए। कुछ साल बाद उन्होंने अपने गुरु विनोबा भावे से बस्तर जाने की इजाजत मांगी। भावे ने उन्हें पांच रुपए का नोट थमाया था और इस शर्त के साथ अनुमति दी कि वे कम से कम दस साल बस्तर में ही रहेंगे।

आगरा विश्वविद्यालय से वाणिज्य में स्नातक सैनी 1976 में बस्तर पहुंचे ओर फिर वहीं के होकर रह गए। जब वे बस्तर आए तो देखा कि छोटे-छोटे बच्चे भी 15 से 20 किलोमीटर आसानी से पैदल चल लेते हैं। बच्चों की इस ऊर्जा को खेल और शिक्षा में इस्तेमाल करने की योजना उन्होंने तैयार की। 1985 में पहली बार उनके आश्रम की छात्राओं की खेल प्रतियोगिता कराई गई। इसके बाद हजारों बच्चों को उन्होंने खेल से जोड़ा। बच्चियों को शिक्षित करने में बेहतर योगदान के लिए 1992 में सैनी को पद्मश्री सम्मान से नवाजा गया। 2012 में 'द वीक' पत्रिका ने सैनी को 'मैन ऑफ द ईयर' चुना था। गांधीवादी विचारों और आदर्शों को मानने वाले सैनी बस्तर संभाग में 37 आश्रम चलाते हैं। ये एक तरह के छात्रावास हैं, यहां रहकर आदिवासी बच्चियां पढ़ाई करती है। सैनी के आने से पहले तक बस्तर में साक्षरता 10 फीसदी भी नहीं थी। आज यह बढ़कर 50 फीसद के करीब है। सैनी के बस्तर आने से पहले तक आदिवासी लड़कियों स्कूल नहीं जाती थी। आज सैनी की छात्राएं बस्तर में कई अहम पदों पर काम कर रही हैं।

## आस्था

# शुभ है देवनागों का स्मरण

**भारतीय** दर्शन सभी प्राणियों में परमात्मा के दर्शन कर उनमें एकता का अनुभव करता है- 'समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठंत परमेश्वरम'। इसी को ध्यान में रखकर नागों की पूजा भी शिवजी को सर्वाधिक प्रिय श्रावण माह में ही की जाती है। उनके गले में विराजमान हैं नागराज वासुकि, तो गणेश जी सर्प को ही जनेऊ की तरह धारण करते हैं। राजस्थान आदि कई स्थानों में यह पर्व श्रावण कृष्णपक्ष की नागपंचमी को मनाया जाता है। जबकि कुछ राज्यों में इसे श्रावण शुक्ल पंचमी को भी मनाया जाता है। अनंत, वासुकि, शेष, पद्मनाभ, कंबल, कर्कोटक, अश्वतर, शंखपाल, धृतराष्ट्र, तक्षक, कालिये और पिंगल इन 12 देव नागों का स्मरण अद्भुत फल प्रदान करता है। 'ओमकुरुकुल्ये हुं फट् स्वाहा' का जाप शुभ माना जाता है। साल के बारह महीनों इसमें से एक-एक नाग की पूजा करनी चाहिए। राहु और केतु कुंडली में अगर नीच राशियों- वृश्चिक, वृष, धनु और मिथुन में हैं, तो अशुभ फलों से मुक्ति पाने के लिए अवश्य ही पूजा की जानी चाहिए। नौ ग्रहों में अनंत नाग सूर्य, वासुकि चन्द्रमा, तक्षक भौम, कर्कोटक बुध, पद्म बृहस्पति, महापद्म शुक्र और कुलिक व शंखपाल

शनि ग्रह के रूप हैं। भगवान कृष्ण की कुंडली देखने वाले गर्ग ऋषि ने शेषनाग से ही ज्योतिष विद्या सीखी थी। इस दिन घर के दरवाजों के दोनों ओर गोबर से नाग का चित्र बनाया जाता है। ऐसी कथा प्रचलित है कि मणिपुर में एक किसान परिवार में एक पुत्री और दो पुत्र थे। खेत में हल जोतते समय हल के फन से नाग के तीन बच्चे मर गए। नागिन ने गुस्से में रात को किसान के घर जाकर उसकी पत्नी और दोनों लड़कों को डस लिया। अगले दिन सुबह किसान की पुत्री को डसने की इच्छा से नागिन फिर आई तो किसान की पुत्री ने उसके सामने दूध से भरा कटोरा रख दिया और क्षमा मांगी। तब नागिन ने उसे वर देते हुए उसके माता-पिता और दोनों भाइयों से शरीर से विष चूस कर उन्हें पुन: जीवित कर दिया और कहा कि जो आज के दिन नागों की पूजा करेगा, उसे नाग नहीं डसेंगे। यह घटना श्रावण शुक्ल पंचमी को घटी थी। तब से इस दिन नागों की पूजा की जाती है। नागों की पूजा से संतान की भी प्राप्ति होती है। लक्ष्मण और बलराम शेषनाग का ही अवतार माने जाते हैं।

*- पं. भानुप्रताप नारायण मिश्र*

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

#राजस्थान_सतर्क_है

# चिरंजीवी

## मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना

**राज्य के हर परिवार को कैशलैस इलाज के लिए प्रतिवर्ष 5 लाख रुपये तक के स्वास्थ्य बीमा का लाभ**

### योजना की खास बातें

- योजना से जुड़े सरकारी और निजी अस्पतालों में भर्ती होने पर (IPD) कैशलैस इलाज
- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA) व सामाजिक आर्थिक जनगणना (SECC 2011) के पात्र परिवारों, लघु व सीमांत कृषक व संविदाकर्मियों का पूरा बीमा प्रीमियम राज्य सरकार देगी
- अन्य परिवार 850 रुपए प्रतिवर्ष के मामूली प्रीमियम पर योजना से जुड़ सकते हैं।

### रजिस्ट्रेशन कैसे करवाएं

- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम और सामाजिक आर्थिक जनगणना 2011 के लाभार्थियों को रजिस्ट्रेशन की आवश्यकता नहीं है
- लघु व सीमांत कृषक, संविदाकर्मी व अन्य लाभार्थी विभाग की वेबसाइट health.rajasthan.gov.in पर दिये लिंक से खुद रजिस्ट्रेशन करें या ई-मित्र पर करवाएं
- लाभार्थी के पास जनआधार कार्ड या जनआधार नम्बर या जनआधार पंजीयन रसीद नम्बर होना आवश्यक है।
  यदि आपके परिवार का जनआधार नामांकन नहीं हुआ है, तो सबसे पहले ई-मित्र पर जनआधार नामांकन करवाएँ

1 से 10 अप्रेल 2021 तक हर ग्राम पंचायत पर भी विशेष रजिस्ट्रेशन शिविर लगाये जाएंगे

**1 अप्रेल 2021 से 30 अप्रेल 2021 तक लाभार्थी स्वयं ऑनलाइन अथवा ई-मित्र पर रजिस्ट्रेशन करवायें**

**योजना का लाभ 1 मई 2021 से मिलेगा**

अधिक जानकारी के लिए 1800 180 6127 पर फोन करें या
विभाग की वेबसाइट health.rajasthan.gov.in/mmcsby देखें

नोडल एजेंसी - राजस्थान स्टेट हेल्थ एश्योरेंस एजेंसी
(चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग)

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, राजस्थान

# कल्याणकारी योजनाएं आमजन को मिला संबल

*डॉ. सत्यनारायण सिंह*

**राजस्थान में अशोक गहलोत सरकार के जनहितकारी निर्णयों में निरोगी राजस्थान अभियान, जनता क्लिनिक, राज्य की नई कृषि विपणन नीति, औद्योगिक नीति, राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना, उद्योगों की स्थापना के अनुकूल वातावरण, वन स्टाप सोल्यूशन जैसे आमूलचूल परिवर्तन महत्वपूर्ण हैं। कोरोना के विरूद्ध लड़ाई में भी मुख्यमंत्री ने अपनी वैज्ञानिक व प्रशासनिक सोच के आधार पर प्रशासनिक योग्यता, संवेदनशीलता व राजनैतिक नेतृत्व का परिचय दिया है। जिसकी सर्वत्र प्रशंसा हुई है। कोरोना पर प्रभावी नियंत्रण और उपचार के मुख्यमंत्री के प्रयास सराहनीय रहे हैं।**

**मुख्यमंत्री** अशोक गहलोत के नेतृत्व में राजस्थान सरकार ने प्रदेश में लोक कल्याण और जन सेवा की भावना से उत्तरदायी, पारदर्शी और संवेदनशील कार्य प्रणाली विकसित करने की दिशा में नए आयाम स्थापित किए हैं। सरकार महात्मा गांधी के जीवन मूल्यों व सिद्धान्तों को आत्मसात कर उनका अनुसरण करते हुए राजस्थान के निर्माण की दिशा में दृढ़ संकल्प के साथ कार्य कर रही है। गहलोत का वर्तमान कार्यकाल विशेष इसलिए है क्योंकि यह एक विचार को विकास की सामूहिक इच्छा में रूपान्तरित कर प्रदेश को समृद्ध, स्वस्थ, साक्षर, हरित, जगमग और मुस्काराता प्रदेश बनाने के संकल्प को क्रियान्वित करने का प्रयास है।

मुख्यमंत्री ने सभी के सहयोग से नए राजस्थान के निर्माण का रोड मैप तैयार कर त्वरित गति से प्रभावी कार्य किया है। संवेदनशील, पारदर्शी और जवाबदेह प्रशासन की वचनबद्धता को दोहराते हुए खुशियों से भरपूर एक समर्थ, सक्षम, समृद्ध राजस्थान बनाने के ध्येय से राज्य के सर्वांगीण और समावेशी विकास का जो संकल्प मुख्यमंत्री की अगुवाई में राज्य सरकार ने लिया है, उसका उद्देश्य प्रदेशवासियों के जीवन को उतरोत्तर समृद्ध और खुशहाल बनाना और राज्य के विकास में योगदान के लिए सभी को अवसर प्रदान करना है। उन्होंने जनोन्मुखी, जनप्रेरित और जनआकांक्षाओं के अनुरूप कार्यशैली अपनाकर प्रदेश को तरक्की की राह पर तेजी से आगे बढ़ाया है। योजनाओं और कार्यक्रमों का केन्द्र बिन्दु गांव व गरीब रहा। शहरी विकास को भी एक नई दिशा दी है, सार्थक पहल की है।

राजस्थान को उद्यमियों का सर्वोत्तम मुकाम बनाने का प्रयास किया जा रहा है तो हर घर को रोशन करने की मुहिम चल रही है। अस्पताल आइए, स्वस्थ होकर जाइए, न जांच का खर्चा,

## संवेदनशील फैसले

कोरोना वायरस की जांच दरों को घटाने, सरकारी खर्च पर मृत व्यक्तियों के ससम्मान अंतिम संस्कार, अस्थि विसर्जन के लिए रोडवेज में निःशुल्क यात्रा सुविधा, मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना में गरीबी रेखा से नीचे वालों के लिए मुफ्त एवं आम आदमी के लिए 850 रुपए वार्षिक बीमा पर विभिन्न अस्पतालों में 5 लाख तक का उपचार खर्च, कोरोना के कारण अनाथ हुए बच्चों को 18 वर्ष की उम्र होने तक तक 2500 रुपया प्रतिमाह एवं उसके पश्चात् एकमुश्त 5 लाख रुपये, विधवाओं को पेंशन। प्रदेश में ऑक्सीजन के उत्पादन के लिए उद्यमियों, स्थानीय निकायों और किसानों को कई रियायतें देने के संवेदनशील फैसले लेने के साथ ही मुख्यमंत्री ने आवश्यक साधन जैसे ऑक्सीजन, जीवन रक्षक दवाओं, ऑक्सीमीटर की कालाबाजारी, जमाखोरी और निर्धारित दरों से अधिक दरों पर बिक्री को रोकने के प्रशासन को कड़े निर्देश दिए। चिकित्सालयों में पर्याप्त चिकित्साकर्मियों, साधनों, उपकरणों को मुहैया कराने के राज्य, संभाग और जिला स्तर पर समुचित प्रबंधन से जुड़े तमाम मसलों पर तत्काल फैसले भी सरकारी की जवाबदेहिता की मिसाल है। इस क्रममें राज्य के सात नए चिकित्सा महाविद्यालयों में प्रोफेसरों व चिकित्सकों के 105 पदों पर नियुक्ति 48 नए न्यायालयों में विभिन्न कैडर के 550 पदों का सृजन, कनिष्ठ लिपिक 2018 की प्रतीक्षा सूची से 689 अभ्यर्थियों को नियुक्ति देने की घोषणा, संविदा सीएचओ भर्ती 2020 की चयन सूची का प्रकाशन, 7,353 चयनितों को कोरोना नियंत्रण के लिए गृह जिलों या समीपवर्ती जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों में नियोजित करने के निर्णय भी महत्वपूर्ण हैं।

न दवा का पैसा। अन्न सुरक्षा योजना के जरिए सामाजिक उत्तरदायित्व को निभाया है। मजबूत वितरण प्रणाली से सार्वजनिक व्यवस्था को सुव्यवस्थित और पारदर्शी बनाया है। शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक पहल, पेयजल के लिए भागीरथी का सशक्तिकरण, पर्यावरण को पंख, जयपुर शहर को विश्व स्तरीय बनाने की कवायद, भ्रष्टाचार की रोकथाम, अनिवार्य एफआईआर रजिस्ट्रेशन गहलोत सरकार के यशस्वी प्रयास हैं। जनहितकारी निर्णयों में निरोगी राजस्थान अभियान, जनता क्लिनिक, राज्य की नई कृषि विपणन नीति, औद्योगिक नीति, नई राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना, उद्योगों की स्थापना के अनुकूल वातावरण, वन स्टाप सोल्यूशन जैसे आमूलचूल परिवर्तन भी उल्लेखनीय हैं। कोरोना के विरूद्ध इस लड़ाई में मुख्यमंत्री ने त्वरित गति से अपने वैज्ञानिक व प्रशासनिक सोच के आधार पर अपनी प्रशासनिक योग्यता, संवेदनशीलता व राजनैतिक नेतृत्व का परिचय दिया है। जिसकी सर्वत्र प्रशंसा हुई है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी गहलोत की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए अन्य

राज्यों को राजस्थान द्वारा अपनाई नीति व कार्यप्रणाली अपनाने की राय दी थी। राज्य सरकार प्रदेश के आमजन एवं गरीब को समय पर नि:शुल्क और सुलभ चिकित्सा सेवा, उपलब्ध करवाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। 40 हजार गांवों में 80 हजार स्वास्थ्य मित्र बनाए जा रहे हैं। नि:शुल्क दवा योजना के अन्तर्गत उपलब्ध कराई जा रही 607 दवाईयों में कैंसर, हृदय, श्वास व गुर्दा रोग आदि के उपचार के लिए नई दवाइयां शामिल की गई हैं। नि:शुल्क जांच योजना में जांचों की संख्या 90 कर दी गई है। बीपीएल व वरिष्ठ नागरिकों को एमआरआई एवं सीटी स्केन की सुविधाएं नि:शुल्क उपलब्ध कराई जाएंगी। 12 जनता क्लिनिक खोले गए हैं। प्रत्येक जिले में 15 नए मेडिकल कॉलेज और 58 आयुर्वेद चिकित्सालय औषधालय खोले जा रहे हैं। राजस्थान सिलिकोसिस नीति 2019 लागू की गई है।

गत वर्ष कोविड-19 महामारी के दुष्प्रभाव व फैलाव को रोकने के लिए भी उन्होंने सर्वप्रथम लॉकडाउन लगाकर आवश्यक व्यवस्था की। टीकाकरण, बैड, दवा, वेंटीलेटर, स्वास्थ्य सेवा में, प्रवासी मजदूरों व प्रवासी छात्रों के लिए प्रबन्ध से देशभर में उदाहरण प्रस्तुत किया। कोविड-19 की दूसरी लहर का मुकाबला करने में स्वयं मुख्यमंत्री चौबीसों घण्टे जुटे हैं। ऑक्सीजन, इंजेक्शन, बैड, वैक्सीन की व्यवस्था करने, स्वास्थ्य सेवा को श्रेष्ठ बनाने में उन्होंने सब कुछ झोंक दिया है। पूरी कांग्रेस की टीम एनजीओ, धार्मिक संगठन, युवा संगठन, विपक्ष सभी को साथ लिया है। वित्तीय कठिनाइयों के बावजूद नि:शुल्क वैक्सीन की घोषणा कर उन्होंने जन नेता का परिचय दिया है।

**( लेखक पूर्व आईएएस अधिकारी हैं )**

# जलाशय संरक्षण मौजूदा दौर की महती ज़रूरत

**सन् 2016 में विश्व बैंक के एक अध्ययन में चेताया गया था कि अगर भारत जल संसाधनों का कुशलतम उपयोग और ऐसा करने के उपायों पर ध्यान नहीं देता है तो सन् 2050 तक उसकी जीडीपी विकास दर छह फीसदी से भी नीचे गिर सकती है। हाल ही में नीति आयोग की रिपोर्ट में बताया गया है कि देश के कई औद्योगिक केन्द्रों वाले शहर अगले साल शून्य भूजल स्तर तक जा सकते हैं।**

*डॉ. तन्मय पालीवाल*

**सनातन** संस्कृति में प्राकृतिक तत्वों को देवतुल्य माना गया है। कण-कण में शंकर एवं नदियों, वृक्षों, पर्वतों प्राकृतिक संसाधनों में परमसत्ता के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। आदिकाल से लम्बी दीर्घावधि तक प्राकृतिक संसाधन अक्षुण्ण एवं सतत विकास की अवधारणा पर अस्तित्वमान रहे। आधुनिक विकास की अंधी दौड़ ने मानव जीवन को सुविधा-संपन्न तो बनाया है किंतु प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण विगत कुछ दशकों से बहुत ही तीव्र गति से हो रहा है। धरती, आकाश, महासागर से लेकर पृथ्वी के सभी प्राकृतिक स्थल प्रदूषित हो रहे हैं। किसी दौर में गांव, कस्बों व शहरों में स्वच्छ जलाशयों की बहुतायत थी। मानव जीवन में जलाशयों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। जब से घरों में नल से जल की आपूर्ति आरंभ हुई एवं समाज का स्वरूप अर्थ प्रधान हुआ है तब से विशेष रूप से अधिकांश जलाशयों के दुर्दिन आरंभ हो गए हैं। शहरों में अधिकांश जलाशय सीवरेज के गंदे पानी, प्लास्टिक एवं प्रदूषक पदार्थों के कारण गंदे नाले के रूप में परिवर्तित होते जा रहे हैं।

ध्यान देने वाली बात है कि पिछले साल शिमला की प्रतिदिन जलापूर्ति 4.4 करोड़ लीटर से कम होकर 1.8 करोड़ लीटर तक जा पहुँची है। पानी के अभाव में पर्यटन को भी भारी नुकसान हुआ है। पानी नहीं होगा तो पर्यटन नहीं होगा, उद्योग अपने कच्चे माल को भी तैयार नहीं कर पाएँगे। लिहाजा देश की सुदृढ़ अर्थव्यवस्था बनाने का सपना मूर्त रूप लेने में समस्या आ सकती है। सन् 2016 में विश्व बैंक के एक अध्ययन में चेताया गया था कि अगर भारत जल संसाधनों का कुशलतम उपयोग और ऐसा करने के उपायों पर ध्यान नहीं देता है तो सन् 2050 तक उसकी जीडीपी विकास दर छह फीसदी से भी नीचे गिर सकती है। हाल ही में नीति आयोग की रिपोर्ट में बताया गया है कि देश के कई औद्योगिक केन्द्रों वाले शहर अगले साल शून्य भूजल स्तर तक जा सकते हैं। तमिलनाडु और महाराष्ट्र जैसे उद्योगों से भरे-पूरे राज्य अपनी शहरी आबादी के 53-72 फीसद हिस्से की ही जलापूर्ति सुनिश्चित करने में सक्षम हैं। भारतीय संस्कृति में जल को देवता का स्थान प्राप्त है। वेद में जल संबंधी मंत्रों का उल्लेख है जिसे आपो देवता सूक्त के नाम से जाना जाता है। ऋग्वेद के सातवें मंडल के 47वें सूक्त में मंत्रदृष्टा ऋषि वरिष्ठ मैत्रावरुणि का उल्लेख है जिसके देवता आप: है ।

**याः सूर्यो रश्मिभिराततान याम्य इन्द्री अरदद् गातुभूर्मिम्।**
**तो सिन्धवो वरिवो धातना नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।**

अर्थात् जिस जल को सूर्यदेव अपनी रश्मियों के द्वारा बढ़ाते हैं एवं इन्द्रदेव के द्वारा जिन्हें प्रवाहित होने का मार्ग दिया गया है, हे सिन्धो (जल प्रवाहों)! आप उन जलधाराओं से हमें धन-धान्य से परिपूर्ण करें तथा कल्याणप्रद साधनों से हमारी रक्षा करें।

आदिकाल से भारतीय परंपराओं में जल का स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण रहा है। जलमात्र उपभोग की वस्तु नहीं मानी गई है अपितु वह स्तुति योग्य है। जलाशयों का पारिस्थितिकी तंत्र से भी निकट का संबंध है। जल के प्रति ऐसी गौरवशाली परंपरा हमारे देश में रही है वहीं दूसरी ओर विकास एवं आधुनिकता की मृगमरीचिका के वर्तमान दौर में कुएं, बावड़ियों, सरोवरों, जलाशयों आदि से हम विमुख से हो गए हैं। मौजूदा दौर में जलाशय अनदेखी एवं संरक्षण के अभाव में काल-कवलित हो रहे हैं। गंगा, यमुना जैसी पवित्र मानी जाने वाली नदियों में सीवरेज

का गंदा पानी, प्लास्टिक, कूड़ा-करकट एवं अन्य रसायनों के मिलने से प्रदूषण का स्तर लगातार बढ़ रहा है।

जल जीवन की मूलभूत आवश्यकता है। सभ्यताओं का विकास नदी घाटियों के समीप ही हुआ है। आधुनिकता के इस दौर में यद्यपि मानव जलाशयों से विमुख-सा हो रहा है किंतु वास्तव में जल संरक्षण की वास्तविक अवधारणा जलाशय संरक्षण में ही निहित है। जलाशय है तो जल संरक्षण संभव है। जलाशय अद्वितीय एवं अनमोल है। संक्षेप में जलाशय संरक्षण के अनेकानेक लाभ हैं यथा-पारिस्थितिकी तंत्र को लाभ, भूजल स्तर में सुधार, पर्यावरण संरक्षण हेतु लाभकारी, छोटे-छोटे जलीय जीव मछली, कछुआ, केकड़े आदि प्राकृतिक जीवों हेतु छोटे जलाशयों का अस्तित्व बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस प्रकार जलाशयों के बहुत ही लाभ हैं। जलाशय संरक्षण में युवा वर्ग की विशेष भूमिका हो सकती है। वर्तमान में जहां भी जलाशय हैं वे कई दशकों पूर्व बने थे। हालांकि उनके संरक्षण में समाज के परोपकारी एवं नि:स्वार्थी सज्जनों का अद्वितीय योगदान रहा है। जलाशय संरक्षण की परंपरा पुनर्जीवित करना बहुत आवश्यक है।

प्राचीन जलाशयों का स्थापत्य बेहद सुनियोजित एवं बेहतरीन तरीके से हुआ है।

जलाशय समाज की विरासत हैं। हमारे पुरखे इन्हें बेहद गंभीरता एवं संजीदेपन से संरक्षित कर भावी पीढ़ियों के लिए छोड़ गए हैं। अत: वर्तमान पीढ़ियों का यह दायित्व है कि इनके संरक्षण हेतु छोटे-छोटे व्यावहारिक एवं प्रभावी प्रयास करें यथा-माह में एक बार श्रमदान, जलाशय के प्रदूषण को दूर करने हेतु यथायोग्य प्रयत्न करना, अपने परिवेश में स्थित जलाशयों से नई पीढ़ी को अवगत करवाना आदि। जलाशय संरक्षण की परंपरा हमारे देश में आदिकाल से रही है। आज की विकट पर्यावरणीय संकटों के परिप्रेक्ष्य में जलाशय संरक्षण जैसे वृहद अभियान में सभी को नि:स्वार्थ एवं लोकहित में छोटे-छोटे सकारात्मक कदम उठाने आवश्यक हैं ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए जल संकट का समाधान हो सके।


हार्दिक शुभकामनाओं सहित

डॉ. महावीर सिंह परिहार
एम.एस. ( आर्थो )
अस्थि रोग विशेषज्ञ
मो. 94141 62139

S H
R C

डॉ. श्रीमती सुमन परिहार
एम.एस. ( सर्जरी )
महिला शल्य चिकित्सक
मो. 98297 91760

श्रीनाथ हॉस्पीटल एण्ड रिसर्च सेन्टर

उपलब्ध सुविधाएं

- आर्म (टेलिविजन) द्वारा आधुनिकतम तरीके से हड्डी के फ्रेक्चर की ऑपरेशन सुविधा।
- स्तन सम्बन्धी रोगों (गाठ, केंसर) का इलाज व निदान।
- एपेन्डिक्स, हर्निया एवं पथरी, बच्चेदानी का ऑपरेशन।
- हड्डी के सभी प्रकार के आधुनिक ऑपरेशन।
- नेलिंग-प्लेटिंग, प्रोस्थेसिस इत्यादि।
- जन्मजात विकलांगता एवं पोलियो के ऑपरेशन।
- प्लास्टर
- एक्स-रे

3-नवरत्न कॉम्पलेक्स, महावीर कॉलोनी पार्क,
80 फीट रोड, एवरेस्ट, आशियान के सामने, उदयपुर

ऑपरेशन एवं भर्ती की सुविधा उपलब्ध

# राजस्थान : असंभव के विरूद्ध संभव का संघर्ष

*वेदव्यास*

**पिछले 72 साल में अधिकतर समय राजस्थान में कांग्रेस ही चुनाव जीतकर सरकारें चलाती रही हैं। यहां लोकतंत्र का एक उदार, धर्म निरपेक्ष तथा समाजवादी मॉडल ही अधिक दिखाई देता है। उदारता और परोपकार की मानसिकता ही यहां के राजकाज में है और मानवाधिकारों व जन अधिकारों के संस्थान तथा कानूनी प्रावधान सबसे अधिक सक्रिय हैं। सूचना का अधिकार और महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार योजना(मनरेगा) पूरे देश में राजस्थान से ही आगे बढ़ा था। अब 1 मई 2021 से मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना का प्रारंभ इसी क्रम में एक बड़ा प्रयास है जो आगे चलकर वृद्धावस्था पेंशन योजना की तरह याद किया जाएगा।**

राजस्थान अपनी स्थापना के 72 साल हाल ही में पूरे कर चुका है और 75वें साल की ओर बढ़ते हुए हीरक जयन्ती मनाने की तैयारी कर रहा है। राजस्थान कोरोना की महामारी और केन्द्र की सामाजिक-आर्थिक नीतियों से संघर्ष कर रहा है। फिर भी यह कहा जा सकता है कि इस प्रदेश की जनता के मन में एक संतोष, सद्भाव और विकास का भाव है। उसने आसमान के तारे तोड़ने और विश्व गुरु बनने का सपना दिल्ली वालों पर छोड़ दिया है। मैंने इस राजस्थान को 1949 से ही बनते और बढ़ते देखा है। यह देश के उन गिने-चुने राज्यों में है जहां साम्प्रदायिक राजनीति और आतंकवादी तथा पृथकतावादी गतिविधियों को कोई स्थान नहीं है। पुलिस और प्रशासन भी हिन्दुत्व, राष्ट्रवाद, लव जेहाद जैसी हिंसा से पीड़ित नहीं है। यहां नफरत फैलाने वाली राजनीति अपना सिर नहीं उठा पा रही है। पिछले 72 साल में अधिकतर समय यहां कांग्रेस की सरकारें ही चुनाव जीतकर शासन चलाती रही हैं। इसलिए लोकतंत्र का एक उदार और धर्म निरपेक्ष तथा समाजवादी मॉडल ही अधिक दिखाई देता है और उदारता और परोपकार की मानसिकता यहां के राजकाज में है। महात्मा गांधी का जीवन दर्शन यहां के मुख्यमंत्री के लिए प्रेरणास्पद है। यहां मानवाधिकारों और जन अधिकारों के संस्थान तथा कानूनी प्रावधान सबसे अधिक सक्रिय हैं। सूचना का अधिकार और महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार योजना(मनरेगा) पूरे देश में स्थापित करने का अभियान राजस्थान से ही आगे बढ़ा था। जवाबदेही का अधिकार, योजनाओं का सामाजिक ऑडिट जैसे प्रावधान आज केवल राजस्थान में ही हैं। यह प्रदेश सौभाग्यशाली है कि यहां अजमेर की दरगाह और पुष्कर का मंदिर खुली हवा में सांस लेते हैं।

प्रगति पर रिफाइनरी कार्य

पंचायतराज व्यवस्था का सबसे पहला दीपक यहां 2 अक्टूबर 1959 को नागौर में प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने ही प्रज्ज्वलित किया था। लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की ताकत आज भी राजस्थान के लिए गर्व की बात है। चंबल नदी पर रावतभाटा परमाणु बिजली घर, राजस्थान नहर से हिमालय का पानी राजस्थान के पश्चिमी रेगिस्तानी जिलों तक पहुंचाना और पोकरण में पहला परमाणु शक्ति परीक्षण हम कैसे भुला सकते हैं। राजस्थान में विकास की कहानी-वास्तव में असंभव के विरुद्ध संभव का संघर्ष ही है क्योंकि हम साम्राज्यवाद और सामंतवाद के अंधेरे से लोकतंत्र की रोशनी तलाश करके लाए हैं। राजस्थान में अब अकाल की बातें लोग भूलते जा रहे हैं। आज तो यहां शिक्षा, चिकित्सा, परिवहन जैसे क्षेत्रों में तेजी से विकास हो रहा है। अकेले कोरोना की महामारी के अनुभव ने राजस्थान का चिकित्सा और स्वास्थ्य का आधारभूत ढांचा बदल दिया है। अब 1 मई 2021 से मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना का प्रारंभ इसी क्रम में एक बड़ा प्रयास है जो आगे चलकर वृद्धावस्था पेंशन योजना की तरह याद किया जाएगा। केन्द्र सरकार पर लोकतंत्र विरोधी आचरण के आरोप लग रहे हैं जबकि राजस्थान सरकार आजादी, संविधान और लोकतंत्र की रोशनी में काम कर रही है। रातों-रात हथेली पर सरसों तो कोई नहीं जमा सकता, लेकिन सरकार की नीति और नीयत ही ये बात तय करते हैं कि उसका मन साफ और रचनात्मक है और इसी का फैसला जनता जनार्दन हर चुनाव में करती है। अत: खुशी है कि राजस्थान के निवासी साम्प्रदायिक राष्ट्रवाद से आज मुक्त हैं और धैर्य और संतोष में जी रहे हैं। मुझे पता है कि राजस्थान को अभी जातिवादी संकीर्णताओं और भ्रष्टाचारी आदतों से लाचार नौकरशाही में सुधार के बहुत काम करना है, लेकिन एक बात फिर कहूंगा कि राजस्थान को महिला उत्पीड़न और दलित, आदिवासी विरोधी मानसिकता से मुक्त होने के लिए सतर्क बनना पड़ेगा और कुप्रथाओं तथा कुरीतियों के खिलाफ सामाजिक सुधार के जन आंदोलन चलाने पड़ेंगे। हम सबका सपना तो यही है कि राजस्थान आदर्श राज्य बने और उदारवाद की राह पर बढ़ते हुए काम करे।

# KHOKHAWAT

## TENT & DECORATORS

- Wedding Consultation
- Event & Concept Decor
- Wedding Decor
- Corporate Decor
- Religious Decor
- Social Events

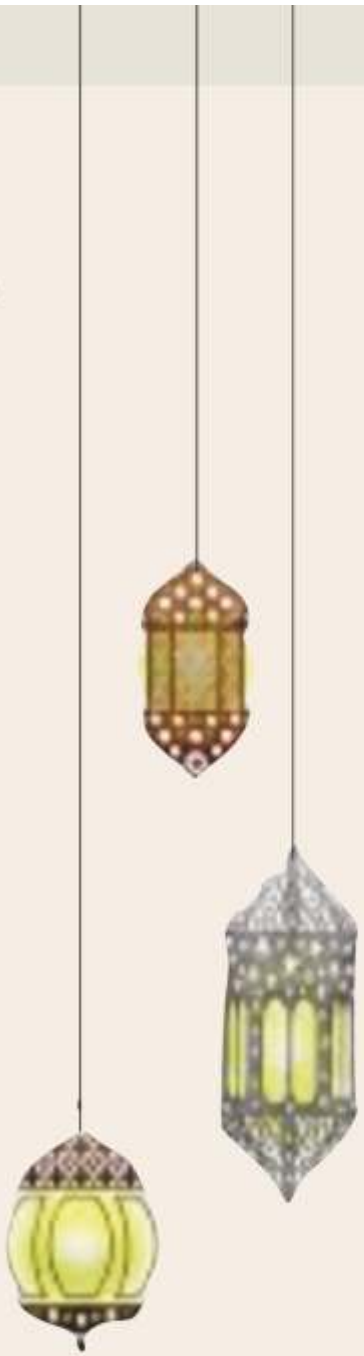

ARJUN LAL KHOKHAWAT
( Director )

+91-9352502843
khokhawattent@gmail.com

168, Bhamashah Marg,
Khokhawat Building, Udaipur

14, Mahapragya Vihar,
Udaipur , 313001

# हिंद महासागर में 'जीनोम मैपिंग'

**राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान ने हिंद महासागर में पहली 'जीनोम मैपिंग' शुरू की है। इसका उद्देश्य समुद्र में पाए जाने वाले बैक्टीरिया, रोगाणुओं का मानचित्रण है। इस अभियान से कैंसर के उपचार तथा वाणिज्यिक जैव प्रौद्योगिकी क्रियाविधि में भारत के शोध कार्यक्रमों को मजबूती और बढ़ावा मिलेगा। जलवायु परिवर्तन और पोषक तत्वों की प्रोटेक्टिव मैपिंग के लिए सामुद्रिक प्रतिक्रिया के अध्ययन में सहायता मिलेगी।**

*प्रिशा शर्मा*

**पृथ्वी** का 70 फीसद हिस्सा जल से घिरा है और धरती पर पाए जाने वाले जीव-जंतुओं के संसार में 90 फीसद समुद्री जीव हैं। महासागरों के बारे में जानकारी बहुत ही कम है। करीब 95 फीसद समुद्र अब भी अबूझ पहेली है। समुद्र अपने गर्भ में दुर्लभ जीव-जंतुओं, बैक्टीरिया और वनस्पतियों का संसार समेटे हुए है। इसमें छिपे रहस्यों को प्रकाश में लाने के लिए गोवा स्थित वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) प्रयोगशाला राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान (एनआईओ) ने हिंद महासागर में पाए जाने वाले सूक्ष्म जीवों की जीनोम मैपिंग के लिए एक अभियान संपन्न किया है, जो समुद्री रहस्यों की परतें खोलने में मददगार हो सकता है। हिंद महासागर जलवायु और ऑक्सीजन के विनयमन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इस अभियान के अंतर्गत हिंद महासागर के विभिन्न हिस्सों में आणविक स्तर पर समुद्र के पारिस्थितिक तंत्र की आंतरिक कार्यप्रणाली को समझने की कोशिश की जा रही है। जीनोम के निष्कर्षों के साथ शोधकर्ताओं ने 90 दिन के अभियान में समुद्री सूक्ष्म जीवों पर जलवायु परिवर्तन, बढ़ते प्रदूषण और पोषक तत्वों की कमी के प्रभाव के आकलन के लिए हिंद महासागर के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग पांच हजार मीटर की गहराई से नमूने एकत्र किए हैं। विशाखापत्तनम बंदरगाह से 14 मार्च को अभियान शुरू हुआ जिसके अंतर्गत लगभग 10 हजार समुद्री मील की दूरी तय की गई।

हिंद महासागर के पारिस्थितिकी तंत्र का गतिशीलता को समझने के लिए आधुनिक आणविक बायोमेडिकल तकनीकों, जीनोम सिक्वेसिंग और बायोटेक्नोलॉजी का उपयोग किया गया। इस जीनोम मैपिंग के माध्यम से बदलती जलवायु दशाओं को ध्यान में रखते हुए महासागर में मौजूद सूक्ष्म जीवों की जैव-रासायनिक प्रतिक्रिया का अध्ययन भी किया गया। यह जीनोम सिक्वेसिंग समुद्री जीवों के आरएनए और डीएनए में परिवर्तन और महासागरीय सूक्ष्मजीवों की मौजूदा स्थिति के लिए जिम्मेदार प्रभावी कारकों की पहचान करने में मददगार हो सकती है।

**सुनीलकुमार सिंह,**
निदेशक, सीएसआईआर

सीएसआईआर-एनआईओ के विज्ञानियों की टीम ने अपने समुद्री जहाज सिंधु साधना पर सवार होकर हिंद महासागर के रहस्यों की पड़ताल की। एनआईओ के 23 विज्ञानियों के इस अभियान दल में छह महिला विज्ञानी भी शामिल थीं।

इस अध्ययन में विज्ञानी समुद्र के विभिन्न हिस्सों में विशिष्ट खनिजों की प्रचुरता और कमी को समझने की कोशिश भी की गई, जिसका उपयोग महासागरीय पारिस्थितिकी प्रणालियों में सुधार से जुड़ी रणनीतियों में किया जा सकता है।

हिंद महासागर में पृथ्वी की पानी की सतह का लगभग 20 फीसद हिस्सा है और इसलिए यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा जल क्षेत्र है। इस शोध परियोजना की लागत करीब 25 करोड़ रुपए है और इसे पूरा करने में लगभग तीन साल लगेंगे। लगभग पांच किलोमीटर की औसत गहराई पर समुद्र के कई हिस्सों से शोधकर्ताओं द्वारा नमूने एकत्र किए जाएंगे। वैज्ञानिक समुद्र में पाए जाने वाले बैक्टीरिया, रोगाणुओं में इनका मानचित्रण करेंगे। इस अभियान में भारत के पूर्वी तट से हिंद महासागर में ऑस्ट्रेलिया, मॉरीशस में पोर्ट लुई से होते हुए पाकिस्तान की सीमा की तरफ से भारत के पश्चिम तट तक के सूक्ष्म जीवों की जीनोम मैपिंग के लिए नमूने एकत्र किए जाएंगे। जीनोम और सूक्ष्म पोषक तत्वों की तलाश में पानी, तलछट, समुद्री पादप और विभिन्न जीवों के नमूने भी लिए जाएंगे।

## पगडंडी

धरती पर
मानव को
गाँव में घर की
राह दिखाती
पगडंडी
पथरीली, समतल
कभी रेतीली ज़मी
बीच गुजरती
पगडंडी
खेत-खलिहान
बागों से जोड़ती
पगडंडी।
घास, पेड़-पौधे
झाड़ियां, पशु-पक्षी
मध्य निकलती
पगडंडी।
सकून और शांति
प्रदान करती
पगडंडी।

**- लक्ष्मीनारायण खत्री**


*Ashok Jain 9214453927*
*Sanjay Jain 9414263666*

**Bright Home**

*"A" Class Govt. Contractor & Supplier*

**33-11KV Overhead Line Material, Industrial Lighting, HT & LT Cables, Cable Joint Kits, Control Panels, Transformers, Switchegers, G.O.D.O. Set**

**247/3, Bapu Bazar, Udaipur - 313001, Ph.: 0294-2422147, E-mail : bright_home@yahoo.com**

## दादी हृदयमोहिनी ने शरीर की पीड़ा को नहीं पहुंचने दिया आत्मा तक

# मुस्कुराहट कुछ अलग और शब्दों में था बल

*शिवानी*

**चेहरे पर सदा मुस्कान और आंखों में ईश्वर के प्यार की चमक रखने वाली राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी का 11 मार्च को शिवलोक गमन हुआ। लाखों लोगों को जीवन में सुख और शांति लाने का तरीका बताने वाली दादी प्रजापिता ब्रह्मकुमारी संस्थान में कई विभागों की प्रमुख थीं। वह 46 हजार बहनों की मार्गदर्शक और अभिभावक भी थीं। उन्होंने खुद को परमात्मा के संदेश को फैलाने का एक जरिया बनाया। उन्हें लोग प्यार और आदर के साथ 'गुलजार' के नाम से भी पुकारते थे।**

**दादी** हृदयमोहिनी कोई भी परिस्थिति आए हमेशा स्थिर रहीं। बात का समाधान भी करती और कैसी भी विषम परिस्थितियां हों उनके चेहरे पर कभी शिकन नहीं आती क्योंकि वे बचपन से ही इस बात में यकीन रखती थीं कि जो हो रहा है वह कल्याणकारी है और इसमें ही परमात्मा मदद करेगा। वे हमेशा यहीं सोचतीं कि परमात्मा करवा रहा है मैं कुछ नहीं कर रही हूं। वे भले ही सभी के आगे थीं, लेकिन अपनी पहचान छिपा परमात्मा को ही सदैव आगे रखा। उनकी सबसे बड़ी खासियत यह थी कि वे बहुत कम बोलती थीं। मतलब उनके शब्दों में काफी शक्ति थी। एक लाइन या फिर तीन से चार शब्दों में बहुत ही गहरी बात बोल देती थीं। एक लाइन भी बोल देती तो उसे ग्रहण कर लेते, क्योंकि उनके शब्दों में बल था। मैं कभी उनके साथ नहीं रही, लेकिन मैं हमेशा उनसे मिलती रहती थी। किसी को भी उन्हें अपने मन की बात बताने की जरूरत नहीं पड़ी। वे अपने आप एक शब्द बोलतीं और हमें जवाब मिल जाता था। पिछले तीन साल से वे मुंबई में थीं। मैं जब भी वहां गई, उनसे मिलना जरूर होता था। शरीर में काफी कुछ था, लेकिन वहां के डॉक्टर हमेशा यह कहते थे कि पहला मरीज देखा, जिसने कभी नहीं बताया कि मुझे यहां दर्द होता है या तकलीफ। वे यह भी कहते कि दादी बताती नहीं है कि उन्हें क्या तकलीफ है तो इलाज में भी परेशानी होती, लेकिन दादी कहती मुझे न कोई दर्द है और न ही तकलीफ

जन्म: 1928 निधन: 2021

क्योंकि उनकी सहनशक्ति काफी थी। उनकी आत्मा इतनी शक्तिशाली थी कि शरीर में तकलीफ होने के बाद भी आत्मा सुखी रहती और यही कारण था कि तकलीफ का अनुभव ही नहीं होता था। इसी वजह से शरीर का प्रभाव आत्मा पर नहीं पड़ने दिया। तभी इतनी स्थिरता से उन्होंने शरीर को इतने साल अच्छे से चलाया। वे जब भी किसी से मिलती तो हमेशा सभी को परमात्मा से जोड़तीं। उनकी मुस्कराहट का कारण स्थिर आत्मा, जब आत्मा स्थिर होती है तो चेहरे की मुस्कुराहट ही अलग होती है और हमने तो हमेशा उन्हें उसी स्थिति में देखा। दादी से इतनी प्रेरणा व शिक्षा ली कि जो दादी ने सिखाया या वे जो चाहती थीं हमें वैसा ही बनना है।

### बचपन में ही दिव्य अनुभूति

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी के बचपन का नाम शोभा था। उनका जन्म वर्ष 1928 में कराची में हुआ। जब 8 वर्ष की थी तब संस्था के संस्थापक ब्रह्म बाबा द्वारा खोले गए ओम निवास बोर्डिंग स्कूल में दाखिला लिया। यहां चौथी कक्षा तक पढ़ाई की। स्कूल में बाबा और मम्मा(संस्थान की प्रथम मुख्य प्रशासिका) के स्नेह, प्यार और दुलार ने इतना प्रभावित किया कि छोटी सी उम्र में ही अपना जीवन उनके समान बनाने का निश्चय किया। इनकी लौकिक मां भी भक्ति भाव से परिपूर्ण थीं। दादी हृदयमोहिनी ने मात्र चौथी कक्षा तक ही पढ़ाई की थी। लेकिन तीक्ष्ण बुद्धि होने से जब भी ध्यान में बैठतीं तो शुरुआत से ही दिव्य अनुभूतियां होने लगीं। दादीजी का पूरा जीवन सादगी, सरलता और सौम्यता की मिसाल रहा। बचपन से ही विशेष योग-साधना के चलते उनका व्यक्तित्व इतना दिव्य हो गया था कि उनके संपर्क में आने वाले लोगों को उनकी तपस्या और साधना की अनुभूति होती थी। उनके चेहरे पर तेज का आभामंडल उनकी तपस्या की कहानी साफ बयां करता था।

**(लेखिका वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका व जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ हैं)**

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

#राजस्थान_सतर्क_है

14 अप्रैल 1891 – 6 दिसम्बर 1956

'भारत रत्न' बाबासाहेब

# डॉ. भीमराव अम्बेडकर

के जन्म दिवस पर **कोटि-कोटि नमन**

"डॉ. भीमराव अम्बेडकर एक ऐसे युग पुरुष थे जिनका जीवन देशहित को समर्पित था। सामाजिक एकता हेतु उनकी सकारात्मक सोच, राष्ट्रीय स्तर पर दूरदर्शी दृष्टिकोण और व्यक्तिगत जीवन में उनकी योग्यताएं अतुलनीय थीं। आइये, उनके जन्म दिवस पर उनके द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलने के प्रण को दोहराएं एवं उनके जीवन से प्रेरित होकर देशहित में अपनी भागीदारी निभाएं।"

– अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री

पहनिए मास्क

धोइए हाथ

रखिए दो गज दूरी

किसी भी सहायता हेतु 181 पर सम्पर्क करें

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

# सोशल मीडिया पर अंकुश ज़रूरी

*भगवान प्रसाद गौड़*

**जिस** देश के युवा अपनी मेहनत, पराक्रम और बुद्धिमत्ता के लिये पहचाने जाते थे। वे आज सोशल मीडिया पर बहन - बेटी, समाज, धर्म और व्यक्ति विशेष की छवि खराब करने के लिए झूठे, भ्रामक ऑडियो-वीडियो बनाने में व्यस्त हैं। यह सब वैचारिक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर हो रहा है। जिनके हाथों में हुनर होना चाहिए वे किसी दूसरे के विचारों से प्रेरित होकर शांति और सुरक्षा को धता बताकर अपने ही देश की संपत्ति और संसाधनों को नष्ट कर देते हैं। यह बहुत चिंतनीय है। आज देश में कई विदेशी सोशल मीडिया कंपनियां है। जो बच्चों, युवाओं और बूढ़ों तक के दिमाग को अपने प्लेटफॉर्म पर परफॉर्मेंस की लत लगा चुकी है। इनका उद्देश्य केवल व्यापार के साथ उस देश के लोगों को मानसिक और वैचारिक रूप से विकृत करने का है। ये कंपनियां दिनों दिन मालामाल हो रही हैं और हमारे नागरिक अपराधी और मानसिक रोगी बन रहे हैं। हमें इस कुचक्र को जल्द समझना और तोड़ना होगा।

विचार अभिव्यक्ति के नाम पर पिछले कुछ सालों में विश्व में सोशल मीडिया नेटवर्किंग साइट्स की बाढ़ आई हुई है। प्रजातंत्र में विचार अभिव्यक्ति की आजादी अहम है। लेकिन आजादी के नाम पर इसका दुरुपयोग होने लगे तो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को सचेत भी होना चाहिए। हर व्यक्ति को खुलकर विचार रखने का अवसर देने वाली आजादी आज आपदा बन रहीं है।

## सोशल मीडिया का साम्राज्य

**भारत** में तकरीबन 350 मिलियन सोशल मीडिया यूजर हैं। जिसमें फेसबुक के 41 करोड़, व्हाट्सएप के 53 करोड़ और इंस्टाग्राम के 21 करोड़ यूजर है। तीनों कंपनियों के कुल 115 करोड़ उपयोगकर्ता हैं। ऐप डाउनलोड के मामले में विश्व में चीन पहले और भारत दूसरे पायदान पर है। एक अनुमान है कि वर्ष 2023 तक भारत में 447 मिलियन यूजर हो जाएंगे। एक रिपोर्ट के अनुसार 2019 में भारतीय उपयोगकर्ता औसतन 3 घंटे सोशल मीडिया पर बिताते है, जो कि 2020 में बढ़कर हर दिन 4.30 घंटे हो गया है। यानि हर व्यक्ति के एक वर्ष के लगभग 70 दिन बेकार ही गुजर गए। कहने को तो सभी सोशल मीडिया नेटवर्क फ्री है। लेकिन फेसबुक ,व्हाट्सएप और इंस्टाग्राम ने पिछले वर्ष 180 मिलियन डॉलर कमाई की। विश्व की 5 बड़ी डिजिटल और सोशल मीडिया कंपनियों की एक वर्ष की कमाई 460 लाख करोड़ रुपए है। जोकि विश्व के लगभग 143 देशों की जीडीपी से अधिक है। इन कंपनियों की व्यापारिक नीतियों किसी भी देश के हित में नहीं हो सकती। भारत में सोशल मीडिया नेटवर्क डिजिटल मार्केट बन चुका है। जिसे ये कंपनियां हरगिज खोना नहीं चाहती। लेकिन बात हमारी आंतरिक सुरक्षा, निजता और सामाजिकता की है, तो कितने चुप बैठेंगे ?

## नुकसानदेह क्यों ?

**सोशल** मीडिया साईट्स अवांछित भाषा,पोर्न वीडियो और आपत्तिजनक सामग्री का हब बनता जा रहा हैं। किसी भी जानकारी का स्वरूप बदलकर उकसाने वाली बना दी जाती है। जिसका हकीकत से कोई ताल्लुक नहीं होता। यहाँ कंटेंट का कोई मालिक नहीं, मूल स्त्रोत का अभाव रहता है। किसी भी बहन-बेटी और व्यक्ति की फ़ोटो और वीडियो को एडिटिंग करके भ्रम फैला दिया जाता है। ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़मरोड़ कर पेश किया जाता हैं। दंगे फैलाने में इसकी सक्रिय भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता। जिसका उदाहरण जम्मू कश्मीर में पत्थर बाजी, नागरिकता संशोधन

बिल और किसान बिल विराधी आंदोलन के वक्त देखा गया। बढ़ते साइबर क्राइम में सोशल मीडिया के हाथ होने से भी कोई नकार नहीं सकता।

## लोभी कंपनियों की मनमानी

**वर्ष** 2018-19 में ट्विटर, फेसबुक सहित कई साइटों पर 3245 आपत्तिजनक सामग्री की शिकायत दर्ज हुई लेकिन जून 2019 तक 2662 पोस्ट ही हटाई गई। जिसके चलते भारत सरकार ने नए आई टी नियम बनाये। जिसे लागू करने की डेडलाइन 25 मई 2021 को खत्म हुई। व्हाट्सएप ने सरकार के विरुद्ध केस दर्ज कराया और ट्विटर ने लोकतंत्र और अपने कर्मचारियों की सुरक्षा पर प्रश्न खड़े कर दिए। जो किसी भी दृष्टि से ठीक नहीं। ट्विटर की मनमानी रुकने का नाम नहीं ले रही है कुछ दिनों पहले उसने कई पत्रकार, नेताओं और पदाधिकारीयों के वेरिफाइड एकाउंट के ब्लू टिक हटा दिए। तब सरकार ने कड़ा रुख अपनाते हुए अंतिम

चेतावनी दी और उसके बाद उसे प्लेटफार्म अधिकार से दरकिनार कर दिया। इससे सिद्ध होता है कि ट्विटर अपना व्यापार और एजेंडा चलाने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। भारत की तरह ब्राजील, कनाडा, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, अमेरिका और न्यूजीलैंड ने सामूहिक बयान जारी कर कंपनियों से पहले मेसेज के स्त्रोत की जानकारी देने के लिए कहा, लेकिन वे आज भी टालमटोल की नीति चल रही है। सोशल मीडिया पर बच्चों की मौजूदगी भी बढ़ गई है। इसका बच्चों पर अच्छा और बुरा मानसिक असर पड़ रहा है। सोशल मीडिया के आदी बच्चों के माता- पिता चिंतित है। क्योंकि उनका स्वास्थ्य गिरने के साथ उनका विकास भी अवरुद्ध होने की संभावना है। ब्रिटिश साइकोलॉजी सोसायटी के अध्ययन से पता चला है कि पूरे दिन सोशल मीडिया पर पोस्ट, लाइक और मैसेज के जबाब देने और चैट करने से व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। जिससे वह चिड़चिड़ेपन और अवसाद का शिकार हो जाता है। सोशल मीडिया इंटरनेट के माध्यम से संसार को वर्चुअल तरीके से जोड़े रखता हैं। यह द्रुतगति से सूचनाओं का आदान प्रदान करता है। इसके कुछ सकारात्मक पहलू है तो कुछ नकारात्मक भी। लेकिन मोटे बैंक बैलेंस वाली कंपनियां धन कमाने के लिये किसी भी देश की सांस्कृतिक विरासत, गोपनीयता, सामाजिकता और राजनीति में दखल देने का संकोच भी नहीं करती। इसलिये तो सोशल मीडिया कंपनियों पर डेटा बेचने के प्राय: आरोप लगते रहते हैं। इसलिए जरूरी है कि देश की प्रगति और बेहतर भविष्य के लिए सोशल मीडिया को नियंत्रित करने के साथ प्रतिबंध लगाने की दिशा में विचार करना ही चाहिए। देश की सामाजिक समरसता को बनाए रखने और समाज को खंड- खंड होने से बचाने के लिए सत्ता पक्ष में बैठे नीति निर्माताओं को कठोर निर्णय लेने ही होंगे।

Ramesh C. Sharma
B.E. (HONS:) ELECT. MIE, FIV, FIIISLA
Chartered Electrical Safety Engineer

TECHNOMIC ENGINEERS

SURVEYOR & LOSS ASSESSORS

Approved Valuer
Chartered Engineer (India)
Insurance Surveyor &
Loss Adjuster

85-K, Bhupalpura Udaipur - 313 001 (Raj) Ph. : (0294) 2413285, 2427165 (R) 2414101 (O)
Mobile : 9414156285, 9829556285, E-mail: technomic@gmail.com

# पोर्ट ब्लेयर अंडमान-निकोबार की धड़कन

*डॉ. जयप्रकाश भाटी 'नीरव'*

**अंडमान-निकोबार** द्वीप समूह की यात्रा जीवन में एक रोमांचकारी यात्रा थी। 'पोर्ट ब्लेयर' अंडमान निकोबार द्वीप-समूह की राजधानी है। यह द्वीपों का सर्वाधिक आकर्षक नगर है। यहाँ सप्ताह के लगभग सभी दिनों दिल्ली, मद्रास और कलकत्ता से वायुयान आते-जाते हैं। बंदरगाहों पर कलकत्ता और मद्रास से वातानुकूलित जलयान भी आते हैं।

नगर की सड़कें साफ-सुथरी व चौड़ी हैं। स्थान-स्थान पर फव्वारे लगे हैं। रात्रि के समय रंगीन फव्वारे मनमोहक दृश्य उपस्थित करते हैं। 'पोर्ट ब्लेयर' की हर रात दीपावली की रात ही होती है। बिजली के बल्बों का प्रकाश नीले-सागर के जल में प्रतिबिम्बित होकर अद्‌भुत मनोहारी व हृदयग्राही छटा उत्पन्न करता है। पोर्ट ब्लेयर के आस-पास सागर के साथ-साथ पहाड़ियां हैं। जिनकी ढलानों पर बहुत बड़ी संख्या में गाँव बसे हैं। यहाँ एक गाँव का नाम 'शादीपुर' है। 'शादीपुर' वह स्थान है जहां अंग्रेजों के शासनकाल में कैदियों के विवाह समारोह हुआ करते थे। इस अनोखे विवाह-समारोह में सभी जाति-समाज तथा धर्मों के स्त्री-पुरूष एकत्रित होते थे और बिना किसी भेद-भाव, जाति व धर्म बंधन के शादी करते थे। आज भी यह परम्परा कायम है और सभी इस

अनोखे वैवाहिक रीति-रिवाज से खुश हैं। यहाँ सभी साक्षर व शिक्षित हैं - योग्यता के आधार पर सभी को रोज़गार उपलब्ध है - बेरोजगारी नहीं है। बाहर जाते समय कोई भी अपने घरों पर ताले नहीं लगाता क्योंकि किसी भी प्रकार की चोरी-चकारी व बदमाशी की आशंका यहां किसी को भी नहीं है।

यहाँ के द्वीपों की हवाएँ बड़ी चंचल हैं, कवि बिसारिया ने लिखा है कि - 'नीला-नीला सागर, नीला है जलधि-जल, जादू वाले टापुओं की, हवा है बड़ी चंचल।' द्वीपों की हवा सचमुच ही चंचल है, शोख और मदमस्त है। यह देख मेरा भी मन कह उठा कि बस यहीं रहूँ, इन जादू वाले द्वीपों में।'

द्वीप-समूह के सभी द्वीप आकर्षक हैं। इन्हें 'लघु भारत' और 'सुषमाओं का स्वर्ग' भी कहा जाता है।

द्वीप समूह प्रशासनिक व्यवस्था की दृष्टि से दो भागों में विभाजित है - 1. अण्डमान द्वीप समूह और 2. निकोबार द्वीप समूह। अण्डमान द्वीप समूह भी तीन भागों में विभाजित है - 1. दक्षिणी अण्डमान 2. मध्य अण्डमान एवं 3. उत्तरी अण्डमान। दक्षिणी अण्डमान में पोर्ट ब्लेयर, लिटल अण्डमान नील व हवलॉक आदि द्वीप हैं।

**राष्ट्रीय स्मारक सेलूलर जेल :** सरकारी सेवाओं के लिए, व्यापार के लिए, निवास के लिए अथवा सैलानियों के रूप में - द्वीपों के दर्शनीय स्थानों के भ्रमण के लिए जो कोई भी आता है, एक बार राष्ट्रीय स्मारक के प्रांगण की पावन-रज अपने माथे पर लगाकर अपने जीवन धन्य अवश्य ही करता है। 'पोर्ट-ब्लेयर' की मेरी यात्रा का मुख्य उद्देश्य भी इसी स्मारक के दर्शन था, जिसे 'काला-पानी' कहा जाता रहा है।

अंडमान-निकोबार द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी में स्थित वर्तमान भारतीय गणतंत्र का एक केन्द्रशासित प्रदेश है। वैसे आज की परिवर्तित

स्थिति में वहाँ कुछ भी काला नहीं है - न धरती, न पानी और न ही लोक जीवन। वहाँ के सरल-निश्छल आदिवासी तथा निर्मल प्रांजल लोक-जीवन भी बड़ा ही प्यारा एवं विविधतापूर्ण है।

देश के क्रांतिवीरों तथा प्रखर स्वतंत्र सेनानियों को कैदकर सुदूर अंडमान में बनी 'सेल्यूलर जेल' में क्रूरतम यातना भुगतने के लिए डाल दिया जाता था। यही कारण था 'अण्डमान निकोबार द्वीप समूह को उस समय 'काला-पानी' की संज्ञा दी जाती थी। आज इसे स्वतंत्रता संग्राम का तीर्थस्थल कहा जाता है। 'सेल्यूलर-जेल' मात्र ऐतिहासिक ही नहीं वरन् राष्ट्रभक्ति का प्रेरणा स्रोत भी है।

पोर्ट ब्लेयर में अनेक दर्शनीय स्थल हैं। गांधी पार्क, वनस्पति विज्ञान संग्रहालय, चिड़ियाघर, मानव-विज्ञान-संग्रहालय, राजभवन, आकाशवाणी, दूरदर्शन केन्द्र एवं नौ सैनिक मुख्यालय कोस्ट मुख्यालय आदि भी पोर्ट ब्लेयर में ही है। यों कहें कि धर्मनिरपेक्षता तथा भारतीय-संस्कृति के संरक्षण और संवर्द्धन का प्रतीक है - 'पोर्ट ब्लेयर।'

पोर्ट ब्लेयर से 26 किमी दूर स्थित चिड़ियाघर टापू संसार का सर्वाधिक मनोरम व सुंदर स्थल

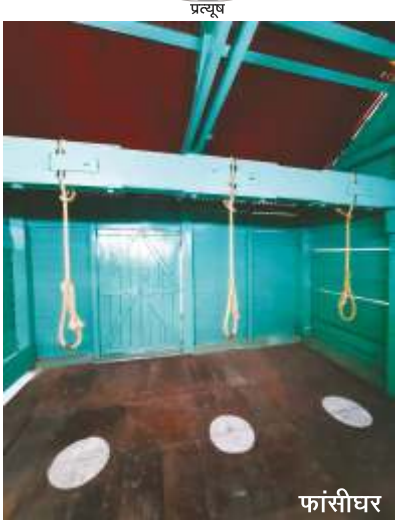
फांसीघर

है। रौस-द्वीप चारों ओर अगम्य सागर-जल से घिरा यह द्वीप पोर्ट-ब्लेयर के निकट है। यही ब्रिटिश हुकूमत का मुख्यालय व उनका निवास स्थान था। अंग्रेजों की विलासिता का यह खण्डहर अब भारतीय नौसेना के अधीन है।

'नील-हैवलॉक' पोर्टब्लेयर का अत्यंत सुंदर व शांत द्वीप है। यह 'स्वराज-द्वीप' के नाम से भी जाना जाता है। पोर्ट-ब्लेयर से 39 किमी मोटर बोट से जाना होता है। यह द्वीप-सघन हरीतिमा, नीले पानी का सागर व सफेद बालू का स्वच्छ तट संसार के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन-स्थलों में गिना जाता है। द्वीप का नाम ब्रिटिश सैन्य कमांडर हैनरी हैवलॉक के नाम पर रखा गया था। आप एकांत व प्रकृति प्रेमी हैं तो 'हैवलॉक' अवश्य ही जाएँ। आपको अंडमान-निकोबार के सभी द्वीपों पर आपके बजट के अनुसार खाने-पीने और रहने के विकल्प आसानी से मिल जाएंगे।

मेरे गाईड 'अनिकेत' ने प्रवास के छः दिनों में मुझे 'पोर्ट ब्लेयर' व अंडमान निकोबार द्वीप समूहों व सेल्यूलर जेल के इतिहास के संबंध में विस्तार से जानकारियाँ देकर मेरी हर जिज्ञासा को शांत किया। उसने यात्रा के अंतिम दिन अंडमान व निकोबार केन्द्र शासित राज्य की प्रगति के बारे में बताया कि साक्षरता में द्वीप समूह का पूरे भारतवर्ष में पाँचवा स्थान है। यहाँ पूर्णतः शांति व सौहार्द से लोग रहते हैं। यह लोकसभा निर्वाचन का एक क्षेत्र है। यहां घर-घर में बिजली, गांव-गांव में पाठशाला, गांव, नगर व शहर में पक्की सड़कें वन-संपदा के उत्पादन में समर्पण भावना प्रगति के मील स्तम्भ हैं। 'वीर विनायक दामोदर सावरकर इंटरनेशनल एयरपोर्ट' का कार्य तेजी से चल रहा है, संभवतः 2022 तक यह तैयार हो जाएगा।

# गुरु में निहित सम्पूर्ण संसार

*पीयूष शर्मा*

**भारतीय** संस्कृति का एक सूत्र वाक्य है - 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'। अंधेरे से उजाले की ओर ले जाने की इस प्रक्रिया में गुरु का बहुत बड़ा योगदान है। संसार में भटकने वाले मनुष्यों को तारने के लिए गुरु के समान बंधन नाशक तीर्थ दूसरा कोई नहीं है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में गुरु को ईश्वर से भी महान माना गया है। मनुष्य के उचित मार्गदर्शन में गुरु की प्रभावी भूमिका रहती है। गुरु का स्थान सर्वोपरि होता है तथा बिना गुरु के कोई कार्य संपन्न करना मुश्किल है।

गुरु का नाम श्रद्धा और निष्ठा को परिपक्व करता है। साधक की अपने गुरु में निष्ठा होनी चाहिए। जैसे एकलव्य की गुरु द्रोणाचार्य में थी। गुरु अपने शिष्यों के भ्रम को दूर करता है और लोहे को पारस बना देता है। सच्चा गुरु मिथ्यावाद को नष्ट कर समाज को अंधेरे से उजाले की ओर ले जा सकता है।

मानव मन में व्याप्त बुराई रूपी विषय को दूर करने में गुरु का विशेष योगदान है। महर्षि वाल्मिकी जिनका पूर्व नाम रत्नाकर था। वे परिवार के पालन-पोषण हेतु चोरी-डकैती करते थे। कालान्तर में इन्होंने ही रामायण जैसे महाकाव्य की रचना की। ये तभी संभव हो सका, जब उनके गुरु नारद जी ने उनका हृदय परिवर्तन किया।

गुरु-शिष्य का समन्वय सेतु के समान है। गुरु की कृपा से शिष्य का मार्ग आसान हो जाता है। स्वामी विवेकानंदजी ने बचपन में परमात्मा को पाने की चाह की। उनकी ये इच्छा तभी पूरी हुई जब उन्हें गुरु रामकृष्ण परमहंस का आशीर्वाद मिला। उन्हीं की कृपा से वे आत्म साक्षात्कार कर सके। गुरु द्वारा कहे गए शब्द या उनकी छवि मानव की काया पलट सकता है। चाणक्य ऐसी ही महान विभूति थे जिन्होंने अपनी विद्वता एवं क्षमताओं के बल पर भारतीय इतिहास की घटनाओं को बदल दिया। गुरु चाणक्य कुशल राजनीतिज्ञ एवं प्रकांड अर्थशास्त्री के रूप में विख्यात थे। उन्होंने अपने वीर शिष्य चन्द्रगुप्ता मौर्य को शासक पद पर सिंहासन रूढ करके अपनी जिस विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया उससे समस्त विश्व परिचित है।

## गुरु पूर्णिमा विशेष

### शिष्य की आत्मा ही गुरु

भगवान शिव पार्वती से गुरु की महिमा के विषय में कहते हैं कि यह संसार ओर इस जगत का प्रारंभ और अंत दोनों ही गुरु में निहित है, जैसे मकड़ी अपनी शरीर के रेशे से जाल बुनती है और फिर उसमें खुद को समेट लेती है, वैसे ही गुरु की प्रेरणा से ही इस संसार में सारे कार्य संपन्न किए जाते हैं। गुरु एक व्यक्तित्व नहीं है। शिष्यों के मन में स्थापित आत्मा का नाम गुरु है।

गुरु हमारे अंतर्मन को आहत किए बिना सभ्य जीवन जीने योग्य बनाते हैं। दुनिया को देखने का नजरिया गुरु की कृपा से मिलता है। पुरातन काल से चली आ रही गुरु महिमा को शब्दों में लिखा नहीं जा सकता। संत कबीर कहते हैं -

सब धरती कागज करूं, लेखनी सब बनराई।
सात समुद्र की मसी करूं, गुरु गुण लिख्या न जाई।।

गुरु ही अपने शिष्यों के अंत:करण में ज्ञान रूपी चन्द्र की किरणें बिखेर सकता है। गुरु कृपा से असंभव कार्य भी संभव हो जाता है। गुरु कृपा शिष्य के हृदय में अगाध ज्ञान का संचार करती है। गुरु का दर्जा भगवान के बराबर माना गया है, क्योंकि गुरु व्यक्ति और सर्वशक्तिमान के बीच एक कड़ी का काम करता है। संस्कृत भाषा के शब्द गु का अर्थ अंधकार और रू का अर्थ है उस अंधकार को मिटाने वाला। आत्मबल को जगाने का काम गुरु ही करत हैं। गुरु अपने आत्मबल द्वारा शिष्यों में ऐसी प्रेरणाएं भरता है जिससे वह अच्छे मार्ग पर चल सके। गुरु शिष्य की अंत:शक्ति से परिचित ही नहीं होता बल्कि उसे जागृत एवं विकसित भी करता है एवं हरसंभव उपाय भी बताता है।

गुरु ही हमारे जीवन को सही राह पर ले जाता है। एक कवि ने तो गुरु की तुलना कुम्हार से की है। जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी को विभिन्न प्रकार के आकार में ढाल लेता है ठीक उसी प्रकार गुरु भी अपने शिष्य को विभिन्न रूपों में ढाल देता है। यह कहना गलत न होगा कि गुरु के बिना जीवन अधूरा एवं अंधकारमय है।

# A-ONE SR. SECONDARY SCHOOL

## University Road, North Ayad, Udaipur

### (ENGLISH MEDIUM) NURSERY TO XII (Commerce & Science)

Dr. M.L. Changwal
Director

## INTRODUCTION

This school is situated in the heart of the city at Ayad on University Road, Udaipur . This Educational institution is run by 'Kanhaiya Sewa Sansthan' established in the year 1998 aiming at all round development of children and is now one of the shining star in the galaxy

## VISION

We have a vision for our scholars & each student must

- Be capable of choosing the right from wrong.
- Build up self – discipline , self confidence and a liking for toil
- Empowering student to achieve success

**ADMISSION OPEN**

## OUR SPECIALITIES

- Limited student in each class
- Teaching through smart classes.
- Medical check up twice in a year
- Aqua Guard filtered cool drinking water facility.
- Well equipped physics , chemistry , biology and computer laboratory
- Spacious library and reading room where student take full advantage of print media & add to their store of knowledge
- Well equipped indoor and outdoor game facility.

- Whole school campus , classroom are under C.C.T.V. surveillance and supervision by management.
- Extra Co – Curricular activities are conducted where all latent talent are drawn out.
- Motivational seminars are conduted by experts and educationist , time to time for the proper growth of student.
- Experienced and devoted teachers.
- Cent Percent board exam result of class X and XII

**Contact :- 0294-2413294 Mobile No. 98280-59294**
**Email id : mlchangwal@gmail.com**

# रथ चढ़ि-आए जगन्नाथ

*पुराणों ने जिन सात नगरियों को मोक्ष देने वाली माना है, उनमें एक है पुरी यानी जगन्नाथ पुरी। पुरी में परमात्मा श्रीकृष्ण ही जगन्नाथ स्वरूप में विराजमान हैं। स्कंद पुराण कहता है, 'यह भूमि धन्य है, जहां संसार के स्वामी स्वयं शरीर धारण करके न केवल बैठे हैं, बल्कि उन्होंने इसे अपने ही नाम से 'जगन्नाथ पुरी' के रूप में प्रसिद्ध कर दिया है।' अथर्ववेद से लेकर ब्रह्म पुराण तक सारे ग्रंथों में भगवान जगन्नाथ की अनुपम महिमा का वर्णन है। जगन्नाथ शब्द का तात्पर्य है, संसार के स्वामी। वे भगवान जगन्नाथ ही प्रतिवर्ष आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष यानी उजियाले पखवाड़े की द्वितीया तिथि को बड़े भाई बलराम और छोटी बहन सुभद्रा के साथ रथ में विराजमान होकर जीव और ईश्वर की दूरी को पाट देते हैं। हर कोई उनके लकड़ी से बने रथ को अपनी शक्ति के अनुसार खींच कर उसे आगे बढ़ाता है। वे कभी रुक जाते हैं तो कभी आगे बढ़ जाते हैं। खुले आसमान के नीचे वर्षा में भीगते हैं तो कभी तेज धूप में गहरे चमकते हैं। फूल-पंखुड़ियों के सौरभ के बीच भगवान जगन्नाथ प्रतिवर्ष अपनी यात्रा पर निकलते हैं और मानव समाज को आनंद प्रसाद बांटते हैं। भक्ति संवेदना में भगवान की प्रतिमा को 'ठाकुरजी' कहा जाता है, जो शताब्दियों पुरानी परंपरा है। भक्ति परंपरा के महान संत रामानुजाचार्य ने ईश्वर के पांच भेद बताए, जिनमें एक 'अर्चावतार' है। अर्चावतार का मतलब घर-मंदिरों में विराजमान भगवान की प्रतिमा से है। ये अर्चावतार विग्रह भक्त के अधीन होते हैं। भक्तों के इनसे बोलने-सुनने और खाने-खिलाने जैसे सारे संबंध होते हैं। अर्चावतार भक्तों से साक्षात सेवा ग्रहण करते हैं। इसी भक्ति धारा में भगवान जगन्नाथ अर्चावतार रूप में रथ पर विराजमान होकर भक्तों को दर्शन देते हैं। रथ यात्रा महोत्सव की शुरुआत में देवताओं को मंदिर से बाहर लाया जाता है और उन्हें संबंधित रथों में विराजमान किया जाता है। देवताओं को मंदिर के गर्भगृह से बाहर लाकर पारंपरिक धार्मिक विधान से रथों तक ले जाया जाता है। सबसे पहले चक्रराज सुदर्शन, उसके बाद हलधर बलभद्र फिर सुभद्रा और सबसे अंत में भगवान जगन्नाथ।*

*शास्त्री कोसलेंन्द्रदास*

## तीन रथ, तीन नाम

**तीन** रथों के भिन्न-भिन्न नाम हैं जिस रथ में भगवान जगन्नाथ विराजते हैं, वह 'नंदीघोष' नाम से जाना जाता है। भगवान बलभद्र के रथ को 'तालध्वज' कहते हैं। सुभद्रा 'देवदलन' रथ में विराजती हैं। चक्रराज सुदर्शन के विग्रह को सुभद्रा के साथ उनके रथ में विराजमान किया जाता है। भगवान जगन्नाथ के प्रतिरूप में मदनमोहन भगवान को जगन्नाथ के रथ में स्थान दिया जाता है। धातु से बने भगवान श्रीराम और कृष्ण के दो मधुर यानी छोटे विग्रह बलभद्र के रथ में बिठाए जाते हैं। इस प्रकार वास्तव में सात देवता जगन्नाथ, बलभद्र, सुभद्रा, सुदर्शन, मदनमोहन, राम और कृष्ण को तीन रथों पर बैठाया जाता है और उन्हें 'गुंडिचा घर' तक ले जाया जाता है। यह जगन्नाथ मंदिर से लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। बलभद्र का रथ सबसे पहले खींचा जाता है, बाद में सुभद्रा और अंत में भगवान जगन्नाथ।

## पांचवें दिन हेरा पंचमी

अगर पहले दिन रथ 'गुंडिचा घर' तक नहीं पहुंच पाते हैं, तो उन्हें अगले दिन फिर से खींचा जाता है। सप्ताह भर तक 'गुंडिचा घर' में विराज रहने के बाद नौवें दिन देव विग्रह फिर से जगन्नाथ मंदिर के सिंहद्वार क्षेत्र में लाए जाते हैं। इस बीच पांचवें दिन एक महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान होता है, हेरा पंचमी। यह पर्व अपने भाई-बहन के साथ रथारूढ़ होकर मंदिर छोड़ आए भगवान से नाराज हुई माता महालक्ष्मी से जुड़ा है। महाप्रभु से नाराज महालक्ष्मी सखियों के संग शरधा बाली( श्रद्धावलि) तक आती हैं। लक्ष्मी की उत्सव प्रतिमा को गाजे-बाजे के साथ गुंडिचा मंदिर तक ले जाया जाता है, जहां भगवान जगन्नाथ द्वारा रथयात्रा में अपने को साथ न ले जाने से गुस्साई लक्ष्मी प्रतीक के तौर पर नंदीघोष रथ का एक हिस्सा तक तोड़ देती हैं। मानवीय लीला के लिए प्रसिद्ध भगवान जगन्नाथ से जुड़ा हेरा पंचमी महत्त्वपूर्ण उत्सव है। रथ को तोड़ने के बाद महालक्ष्मी पुन: श्रीमंदिर लौट आती हैं। महालक्ष्मी का विमान हेरा साही होते हुए मंदिर लौटने के कारण इस तिथि को 'हेरा पंचमी' कहा जाता है।

## देवशयनी एकादशी पर आराधना भोग

दसवें दिन आषाढ़ की शुक्ल पक्ष एकादशी होती है। इस दिन शाम को देवताओं को सोने के आभूषणों से सुसज्जित किया जाता है। उन्हें सिंहद्वार क्षेत्र में लाने के लिए भव्य और आकर्षक कपड़े पहनाएं जाते हैं। इसी दिन वैदिक और पौराणिक अनुष्ठान होता है। यह दिन हरिशयनी एकादशी है, जिसे आम बोलचाल में देवशयनी एकादशी बोलते हैं। 'शतपथ ब्राह्मण' के अनुसार इस दिन से चातुर्मास व्रतअनुष्ठान शुरू होता है। देवताओं का शयन काल प्रारंभ होता है, जो चार महीने चलता है। बारहवें दिन भगवान जगन्नाथ को 'आराधना भोग' भेंट किया जाता है। इसमें उन्हें मीठा पेय चढ़ाया जाता है। अगले दिन की शाम को अनगिनत भक्तों की भीड़ के बीच पारंपरिक जुलूस में देवताओं को मंदिर में ले जाकर स्थापित किया जाता है।

## मंदिर : विशेष तथ्य

- मंदिर के पास हवा की दिशा हैरान करती है। समुद्री तटों पर हवा समुद्र से जमीन की तरफ चलती है लेकिन, पुरी में हवा जमीन से समुद्र की तरफ चलती है।
- मंदिर के शिखर की कोई छाया या परछाई कभी नहीं होती है।
- जगन्नाथ मंदिर के ऊपर कोई भी पक्षी उड़ता हुआ नहीं देखा गया। मंदिर के ऊपर से विमान उड़ाना भी निषिद्ध है।
- जगन्नाथ मंदिर के रसोईघर को दुनिया का सबसे बड़ा रसोईघर माना जाता है। मान्यता है कि कितने भी श्रद्धालु आ जाएं, यहां अन्न कभी खत्म नहीं होता।
- मंदिर में मूर्तियां काष्ठ की हैं। हर बारहवें वर्ष में ये नई बनाई जाती हैं, लेकिन इनका आकार और रूप वही रहता है।

- मंदिर की रसोई में प्रसाद पकाने के लिए सात बर्तन एक-दूसरे के ऊपर रखे जाते हैं। यह प्रसाद मिट्टी के बर्तनों में लकड़ी से पकाया जाता है। इस दौरान सबसे ऊपर रखे बर्तन का पकवान पहले पकता है फिर नीचे की तरफ से एक के बाद एक प्रसाद पकता जाता है।
- इस मंदिर के शिखर पर लगे सुदर्शन चक्र को कहीं से भी देखें तो वह सीधा ही नजर आता है।
- मंदिर के ऊपर लगा ध्वज हमेशा हवा की विपरीत दिशा में लहराता रहता है।
- मंदिर सातवीं सदी में बनवाया गया, जो अब तक तीन बार खंडित हुआ है। 1174 ईस्वी में महाराज अनंगभीम देव ने इसका जीर्णोद्धार करवाया।

## भिन्न-भिन्न रंगों में रंगे रथ

वंशानुगत विशेषाधिकार प्राप्त लोगों द्वारा बलभद्र, सुभद्रा और भगवान जगन्नाथ के लिए तीन रथों का निर्माण हर साल नई लकड़ी से किया जाता है। भगवान जगन्नाथ का रथ पैंतालीस फीट ऊंचा और पैंतालीस फीट चौड़ा होता है, जिसमें सोलह पहिए होते हैं। प्रत्येक का फैलाव सात फीट का है। यह रथ लाल और पीले कपड़ों से अलंकृत होता है। भगवान जगन्नाथ को कृष्ण ही माना जाता है, इस नाते उन्हें 'पीतांबर' नाम से पुकारा जाता है। वे रथ में सुनहरे पीले वस्त्र धारण कर विराजमान होते हैं। यहां तक कि रथ की छतरियों को पीली बंदनवारों और ध्वजा-पताकाओं से सजाया जाता है। इस मनोहारी उत्सव का नजारा कई दिनों पहले से जम जाता है। भगवान बलभद्र के तालध्वज रथ पर लगे झंडे में वृक्ष की आकृति होती है। चौदह पहिए होते हैं। प्रत्येक का व्यास सात फीट होता है। रथ लाल और नीले कपड़े से ढंका होता है, जिसकी ऊंचाई चौवालीस फीट होती है। बारह पहियों वाला सुभद्रा का रथ तिरालीस फीट ऊंचा होता है। इस रथ को लाल और काले कपड़े से सुसज्जित किया जाता है, जिसे पारंपरिक रूप से लोग शक्ति और मातृका देवी के साथ जोड़ते हैं। शक्ति का रंग लाल और योगिनियों का वर्ण कला है। प्रत्येक रथ में भिन्न-भिन्न सारथी होते हैं। भगवान जगन्नाथ के सारथी मातलि हैं। बलभद्र के दारुक और सुभद्रा के सारथी अर्जुन होते हैं।

## 12 साल में नवशरीर-उत्सव

रथयात्रा आने-जाने वाला काल मात्र नहीं है, बल्कि यह पूरा अनुष्ठान है, जो लगभग वर्ष भर चलता है। परम्परागत रूप से माघ शुक्ल पंचमी को मनाई जाने वाली बसंत पंचमी के दिन से रथ निर्माण के लिए लकड़ियों का आना शुरु हो जाता है। शगुन के तौर पर मंदिर में लकड़ी का पहला गुरु वसंत पंचमी को ही आता है। पर रथों का निर्माण अक्षय तृतीया से शुरु होता है। इस प्रकार पूरे दो महीनों में रथ बन कर तैयार हो जाते हैं। यात्रा के लिए हर साल नए रथ बनाए जाते हैं। पर रथों में लगने वाले लकड़ी के घोड़े, सारथी और रथों को सजाने वाले छोटे देवताओं को बारह वर्षों में एक बार बनाया जाता है। भगवान जगन्नाथ, उनके भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा की लकड़ी की प्रतिमा बारह सालों में एक बार बनाई जाती है। इस प्रक्रिया के अनुष्ठान को 'नवशरीर-उत्सव' कहा जाता है। यह समारोह पिछली बार 2015 में मनाया गया था। इन लकड़ियों की व्यवस्था सरकारी स्तर पर होती है। पर यह अलौकिक चमत्कार है कि भगवान जगन्नाथ समेत दूसरी प्रतिमाओं के निर्माण के लिए उपयोग में आने वाली काष्ठ समुद्र में बह कर खुद ही यथासमय किनारे लग जाती है।

# कर्नल सारंगदेवोत को फिर से कुलपति की कमान

**जनार्दनराय** नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय की ओर से गठित सर्च कमेटी ने अगले पांच वर्षों के लिए कुलपति के पद पर कर्नल प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत को पुन: मनोनीत किया। उनके कार्यकाल की वृद्धि पर विद्यापीठ कार्यकर्ताओं, शहर के प्रबुद्ध नागरिकों व सामाजिक संगठनों ने प्रसन्नता व्यक्त की है। प्रो. सारंगदेवोत ने सर्च कमेटी के निर्णय के बाद विद्यापीठ के संस्थापक जनुभाई की आदमकद प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया। उन्होंने कहा कि उच्च स्तरीय बेहतर मानव संसाधन एवं कार्यकर्ताओं की कुशलता, मेहनत एवं लगन की वजह से ही विद्यापीठ उन्नति एवं प्रगति के मार्ग पर उन्मुख है। उल्लेखनीय है कि पं. जनार्दनराय नागर ने 83 वर्ष पूर्व 21 अगस्त 1937 को पांच कार्यकर्ताओं के साथ संस्था की शुरूआत की थी। जिसने आज 50 करोड़ के वार्षिक बजट तथा 15 हजार से अधिक विद्यार्थियों के साथ वटवृक्ष का रूप ले लिया है। सारंगदेवोत के नेतृत्व में विद्यापीठ ने पिछले 9 वर्ष में नेक में ए ग्रेड विवि, यूनि रेंक के तहत उदयपुर संभाग में प्रथम, राजस्थान के 70 विवि में 07वां, भारत के 900 विवि में से 142वां स्थान व विश्व के 30 हजार विवि में से 5032वां स्थान प्राप्त कर एक कीर्तिमान स्थापित किया। 07 करोड़ की लागत से डबोक परिसर में स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साईंसेज के भवन का निर्माण, दो एनसीसी विंग की नई यूनिट का प्रारंभ, विवि की ओर से 88 पेटेंट फाईल किए जा चुके व 4 कॉपीराईट भी हैं। पूर्व में यूजीसी द्वारा पांच पाठ्यक्रमों की ही मान्यता प्राप्त थी लेकिन वर्तमान में 22 स्नातक, 30 स्नातकोत्तर, 10 डिप्लोमा पाठ्यक्रम सहित 115 पाठ्यक्रमों की यूजीसी द्वारा मान्यता प्राप्त हो गई है, जिसका संचालन आगामी दिनों में किया जाएगा। इनके कार्यकाल के दौरान ही विधि महाविद्यालय, फार्मेसी, बीए बीएड, बीएससी, विज्ञान महाविद्यालय, कन्या महाविद्यालय, एग्रीकल्चर महाविद्यालय, स्पेशल बीएड, योगा, एमपीएड सहित कई पाठ्यक्रमों की शुरूआत की गई।

## भावी योजनाएं

- विश्वविद्यालय के डबोक परिसर में 12 करोड़ की लागत से 110 बेड वाले चिकित्सालय का निर्माण।
- नर्सिंग महाविद्यालय, आयुर्वेदिक महाविद्यालय की स्थापना
- ग्रामीण क्षेत्रों में संचालिक सामुदायिक जनभारती केन्द्रों के माध्यम से ग्रामीण युवाओं को कौशल विकास के पाठ्यक्रमों से जोड़ना।


Advaiya

BUSINESS APPLICATIONS AND ANALYTICS SOLUTIONS

Executing purposeful digital initiatives is the key to digital transformation. Powered by a tailored set of relevant technologies and tools, our solutions allow business to enhance their decision-making skills, deliver superior customer experience, increase business productivity, and initiate technology-led innovation

Advaiya Solutions, Inc.

14575 NE Bel Red Rd,
Ste 201, Bellevue WA 98007, USA
Phone : +1-425-256-3123

Advaiya Solutions Pvt. Ltd.

G14-17, IT Park,
MIA Extension Udaipur, India 313002
Udaipur : 313001 India
Phone : +91 294 305 1100

वीरेंद्र कुमार डांगी

रजनी डांगी

# डांगी इण्डस्ट्रीज

सोप स्टोन पाउडर

डोलोमाइट

चाइना क्ले

केल्साइट पाउडर के निर्माता एवं माइनिंग

- पर्ल मिनरल्स एंड केमिकल्स
- डांगी माइनिंग प्राईवेट लिमिटेड
- नेनो क्ले एंड मिनरल्स प्राइवेट लिमिटेड
- देवपुष्प माइनिंग इण्डस्ट्रीज, किच्छा (उत्तराखंड)

एफ-39 (ए) आई. टी. पार्क, रोड नं. 12, मादडी इण्डस्ट्रीयल एरिया, उदयपुर 313 003

फोन : 9649203061/9672203061, ईमेल: pearlmin@rediffmail.com, dangiindustries@rediffmail.com

## पी.आर.पी., ब्लास्टोसिस्ट कल्चर एवं एम्ब्रीयो फ्रीजिंग

# नई पद्धतियों से आईवीएफ में बढ़ी सफलता की दर

**संतान की आस में जगह-जगह इलाज और झाड़-फूंक, टोने-टोटकों से थक चुके नि:संतान दम्पतियों के जीवन में आईवीएफ (In vitro fertilization) या टेस्ट ट्यूब बेबी तकनीक कारगर है। इसमें भी अब पीआरपी तकनीक, ब्लास्टोसिस्ट कल्चर एवं एम्ब्रीयो फ्रीजिंग नई पद्धतियों के समावेश से सफलता की दर बढ़ रही है।**

*डॉ. श्वेता अग्रवाल*

**पीआरपी** तकनीक उन महिलाओं जिनमें बच्चेदानी की लाइनिंग बहुत कमजोर है या अंडाशय के समय से पहले काम बंद करने से जल्दी माहवारी बंद हो गई है उनके लिए वरदान साबित हो रही है, प्लेटलेट प्लाज्मा तकनीक।

क्या है पीआरपी ? रक्त प्लाज्मा में बाहुल्य मात्रा में प्लेटलेट्स पाए जाते हैं पी आर पी ऐसी तकनीक है जिसमें मरीज के शरीर से ब्लड(20-30 ml)निकाल कर उसे विशेष तकनीक की मदद से ब्लड कंपोनेंट को अलग किया जाता है जिसमें प्लेटलेट रिच पदार्थ काफी मात्रा में होते हैं इसमें ग्रोथ फैक्टर एवं हार्मोन्स होते हैं जिनकी रिजेंनरेटिव क्षमता अभूतपूर्व होती है।

### कहाँ है पीआरपी की उपयोगिता

1. कुछ मरीजों में यूटरस/बच्चेदानी की झिल्ली बहुत कमजोर होती है सामान्यत: आईवीएफ के दौरान झिल्ली 7 से 12 एमएम होनी चाहिए। पहले इन महिलाओं को सरोगेसी की राय दी जाती थी पीआरपी में उपस्थित ग्रोथ फैक्टर एवं हार्मोन बच्चेदानी की झिल्ली में सुधार करते हैं एवं ऐसे मरीजों में आईवीएफ सफलता की दर बढ़ जाती है।
2. जिन महिलाओं में समय से पहले अंडाशय काम करना बंद कर देते हैं एवं मीनोपॉज आ जाता है उसमें भी लेप्रोस्कोपी के दौरान अण्डाशय में पीआरपी थेरेपी इंजेक्ट की जाती है एवं समय के साथ अण्डाणु मात्रा एएमएच में सुधार होता है। वे स्वयं के अंडाणु से मां बन सकती हैं।

### ब्लास्टोसिस्ट कल्चर एवं ट्रांसफर

अब भ्रूणों को प्रयोगशाला में ब्लास्टोसिस्ट चरण तक विकसित करना संभव है जो कि फर्टिलाइजेशन के पांचवे दिन होता है(जब भ्रूण में 500 कोशिकाएं) होती है। आम तौर पर सबसे स्वस्थ भ्रूण ही ब्लास्टोसिस्ट चरण तक पहुंच पाते है क्योंकि वही मुख्य विकास तथा विभाजन की प्रक्रियाओं तक जीवित बच पाते है तथा एक बार ट्रांसफर होने के बाद इन्हीं के सबसे ज्यादा विकसित होने के अवसर रहते हैं और एक साथ कई गर्भ ठहरने का खतरा कम हो जाता है। अधिक बेहतरीन भ्रूणों का चयन होने से एक या दो भ्रूणों को ट्रांसफर करने से भी गर्भावस्था के अवसर बढ़ जाते हैं।

### सर्वश्रेष्ठ भ्रूण का विकास

भ्रूणों का सहज प्राकृतिक विकास उनके बढ़ने व विभाजित होने की क्षमता निर्धारित करता है। कुछ अंडे शुरुआत में निषेचित हो जाते हैं। उसमें से कुछ, दूसरे दिन फोर सेल स्टेज तक पहुंच पाते हैं, तो कुछ तीसरे दिन आठवें चरण तक और उनमें से भी कुछ ही ब्लास्टोसिस्ट चरण तक विकसित हो पाते है। सरल भाषा में देखें तो इसे सबसे योग्यता का बचे रहना कहा जा सकता है। अमूमन 30-50 प्रति. भ्रूण ही ब्लास्टोसिस्ट तक पहुंच पाते हैं ब्लास्टोसिस्ट कल्चर के लिए मीडिया का प्रयोग होता है जो जीवन को बनाए रखने वाले पोषक तत्वों से पूर्ण होता है अनुभवी एम्ब्रोलॉजिस्ट की देख-रेख में प्रतिदिन भ्रूण को उनके विकास के अनुसार

पृथक मीडिया की प्लेट में बदला जाता है।

आईवीएफ के साथ ब्लास्टोसिस्ट ट्रांसफर के लाभ

1. रिसर्च के अनुसार ब्लास्टोसिस्ट कल्चर एवं ट्रांसफर से टेस्ट ट्यूब बेबी रिजल्ट में अहम् बढ़ोतरी हुई है।
2. ब्लास्टोसिस्ट कल्चर व ट्रांसफर का मुख्य लाभ है एक साथ कई गर्भ ठहरने से रोकना।

इनका अर्थ है कि एक साथ कई गर्भ ठहरने से प्रसूति में जो जटिलताएं होती हैं वे कम हो जाती हैं।

3. कई बार टेस्ट ट्यूब बेबी प्रक्रिया में लाभान्वित नहीं हुए दम्पत्ति एवं अधिक उम्र की महिलाओं जिनमें बच्चेदानी की स्थिति अच्छी नहीं है, उनमें ब्लास्टोसिस्ट के परिणाम बहुत उत्साहजनक हैं।
4. स्वयं के अंडे वाले मरीज जिनका दो या अधिक प्रेग्नेंसी वाले मरीज जिनको दो या अधिक प्रेग्नेंसी की वजह से ओएचएसएस का खतरा रहता है वह भी एक या दो ब्लास्टोसिस्ट ट्रांसफर से खत्म हो जाता है।

## भ्रूण विट्रिफिकेशन

क्या है भ्रूण विट्रिफिकेशन? यह भ्रूण को फ्रीजिंग करने की नवीनतम तकनीक है जिसमें भ्रूण अल्ट्रा रेपीड/600 गुणा तीव्र गति से ठंडा किया जाता है जिससे फ्रीजिंग में बर्फ के क्रिस्टल बनने से होने वाली हानि कम हो जाती है। भ्रूण को विट्रिफिकेशन पश्चात् (196 डिग्री सेन्टीग्रेड) पर लिक्विड नाइट्रोजन में स्टोर किया जाता है। पारंपरिक फ्रीजिंग की बजाय विट्रिफाइड फ्रीजिंग के लाभ हैं। अल्ट्राफिजिंग/रेपिड फ्रिजिंग के कारण भ्रूण को कम-से-कम हानि-पिघलाने पर उत्तम जीवित भ्रूण की प्राप्ति

## उच्च भ्रूण आरोपण दर

फ्रोजन एंब्रियो ट्रांसफर से स्वयं के अण्डे उपयोग में लेने वाली महिलाओं में खासकर पीसीओडी के मरीजों में स्वयं के अंडों में सफलता दर बढ़ाती है क्योंकि अंडा बनने वाले इंजेक्शन से अंडाशय का साइज 4 से 6 गुना बढ़ जाता है जिससे इंप्लांटेशन रेट कम होती है ऐसे में स्वयं के अण्डों से भ्रूण बनाकर फ्रीज कर देते हैं और डेढ़ महीने बाद जब अंडाशय का साइज नॉर्मल आ जाता है तो भ्रूण प्रत्यारोपित कर देते हैं एक बार अंडे बनने के इंजेक्शन लगाने से भ्रूण बनाकर फ्रिज करने से दूसरे व तीसरे सायकल का खर्चा काफी कम हो जाता है।

(लेखिका आर. के. आईवीएफ, उदयपुर की निदेशक हैं)

श्री

Shankar Lal 9414160690
Jyoti Prakash 9414161690
Chetan Prakash 9413287064

Jyoti Stores
(A Leading Merchant in Ayurvedic Medicines)

ज्योति स्टोर्स

Outside Delhi Gate, UDAIPUR - 313 001 (Raj.)

Ph. : 2420016 (S), 2415690 (R)

Factory : Jhamar Kotra Main Road, EKLINGPURA, Udaipur, Ph. : 2650460

E-mail : jagritiherbs@yahoo.co.in, Website : www.jagritiayurved.com

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

#राजस्थान_सतर्क_है

# चिरंजीवी

## मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना

**हर परिवार को 5 लाख रुपये का निःशुल्क बीमा**

**3500 करोड़ रुपये का प्रीमियम राज्य सरकार द्वारा वहन**

**अब** रजिस्ट्रेशन अभियान 30 अप्रेल 2021 तक

**और** ई-मित्र केन्द्र पर पंजीकरण निःशुल्क

### योजना की खास बातें

- राज्य के सरकारी और संबद्ध निजी अस्पतालों में भर्ती होने पर 5 लाख रुपये तक की निःशुल्क चिकित्सा सुविधा
- प्रतिवर्ष सामान्य बीमारी 50 हजार और गंभीर बीमारी 4.50 लाख रुपये का निःशुल्क उपचार
- भर्ती के 5 दिन पूर्व और डिस्चार्ज के बाद 15 दिन तक का व्यय शामिल
- बीमारियों के 1576 प्रकार के पैकेज और प्रोसीजर उपलब्ध
- रजिस्ट्रेशन शिविर ग्राम पंचायत के साथ-साथ गांव स्तर व शहरों में वार्ड स्तर पर चल रहे हैं।
- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम और सामाजिक आर्थिक जनगणना-2011 के लाभार्थियों को रजिस्ट्रेशन की आवश्यकता नहीं है। उन्हें पूर्व की भांति योजना का लाभ मिलता रहेगा।

### योजना से जुड़ने की प्रक्रिया हुई सरल

- लघु व सीमान्त कृषक, संविदाकर्मियों तथा गत वर्ष राज्य सरकार द्वारा कोविड-19 अनुग्रह राशि भुगतान प्राप्त करने वाले निराश्रित एवं असहाय परिवारों का सम्पूर्ण प्रीमियम राज्य सरकार द्वारा वहन किया जायेगा।
- ऐसे परिवार जो उपरोक्त श्रेणियों में नहीं आते हैं, वे 850 रुपये प्रीमियम जमा करवाकर इस योजना का लाभ ले सकते हैं।
- ई-मित्र केन्द्र पर लगने वाले पंजीयन शुल्क, प्रीमियम राशि जमा शुल्क, पॉलिसी दस्तावेज प्रिंटिंग शुल्क का भार राज्य सरकार द्वारा वहन किया जायेगा।
- ऐसे लाभार्थी जिनका जनआधार कार्ड नहीं बना है, वे ई-मित्र केन्द्र पर जनआधार पंजीयन निःशुल्क करवा सकते हैं तथा पंजीयन रसीद के आधार पर योजना में रजिस्ट्रेशन करवा सकते हैं।

**1 मई 2021 से योजना पूरे प्रदेश में लागू होगी**

**योजना के लिए परिवार का आकार एवं आय की सीमा नहीं है**

**ऐसे ई-मित्र जो पंजीयन अभियान के दौरान अपने क्षेत्र के पात्र लाभार्थियों में से 80% से अधिक रजिस्ट्रेशन करवाते हैं तो उन्हें प्रति रजिस्ट्रेशन 5 रुपये का प्रोत्साहन भी दिया जायेगा**

**30 अप्रेल 2021 तक रजिस्ट्रेशन नहीं कराने वालों को योजना में लाभ लेने हेतु बाद में रजिस्ट्रेशन कराने पर 3 महीने का इंतजार करना होगा**

**सरकारी कार्मिकों को इस योजना से जुड़ने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि केन्द्र सरकार की CGHS की तर्ज पर राज्य सरकार द्वारा RGHS लागू की जा रही है**

नोडल एजेंसी - राजस्थान स्टेट हैल्थ एश्योरेंस एजेंसी
(चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग)

अधिक जानकारी के लिए 1800 180 6127 पर फोन करें या विभाग की वेबसाइट health.rajasthan.gov.in/mmcsby देखें

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, राजस्थान

# ब्लैक फंगस कारण, विश्लेषण और निवारण

**भले ही कोविड-19 की दूसरी लहर कमजोर पड़ रही हो, मगर देश के पांच राज्य अभी भी कोरोना और ब्लैक फंगस की निराशाजनक स्थिति से गुजर रहे हैं। इस घातक बीमारी ने केन्द्र और राज्य सरकारों को हाई अलर्ट पर रखा हुआ है। कई राज्यों ने काले कवक को महामारी के रूप में घोषित किया है। फंगस इंफेक्शन नाक से शुरू होकर दिमाग तक फैल सकता है। इसका समय पर निदान और उपचार न कर अनुपचारित छोड़ दिया तो यह घातक साबित हो सकता है। गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, तेलंगाना, उत्तरप्रदेश और राजस्थान में अब तक ब्लैक फंगस के बड़ी संख्या में मामले सामने आए हैं।**

*डॉ. यश गोयल*

भारत में कोविड-19 रोगियों में ब्लैक फंगस की शरीर में क्या क्रिया-प्रतिक्रिया है? क्या चिकित्सकों के पास इस सामान्य घरेलू फफूंद(ब्लैक फंगस) के कारण, व्यापकता और उपचार पर सही उत्तर है? इसका वैज्ञानिक नाम म्यूकोर्मिकोसिस है। जिसे पहले जाइगोमाइकोसिस कहा जाता था, जो अब कोरोना वायरस से जुड़ा हुआ है। मूल प्रश्न ये है कि क्या ब्लैक फंगस को कोरोना के दूसरे वेरिएंट(डेल्टा) से होने वाली मृत्यु का कारण माना जाए? अमेरिका की सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन की एक ताजा रिपोर्ट में बताया गया है कि ब्लैक फंगस से गत तीन माह के इलाज के बाद भी भारत में 46 प्रतिशत कोरोना मरीजों की मृत्यु हुई है। लगभग 65 प्रतिशत मरीजों में पाया गया कि ये फफूंद का रोग उन्हें कोरोना के बाद हुआ था। इन मरीजों में 28 प्रतिशत मौतें छह सप्ताह के इलाज के बाद हुई। 75 प्रतिशत रोगी पुरुष थे जिनकी औसत उम्र 53 साल थी। 33 प्रतिशत मामलों में रोगी डायबिटीज से पीड़ित थे, और 21 प्रतिशत को पहले कोरोना हुआ था। भारत में ये बीमारी गत दीपावली के बाद तेजी से फैली है।

भले ही कोरोना-19 की दूसरी लहर कमजोर पड़ रही हो, मगर देश के पांच राज्य अभी भी कोविड-19 और ब्लैक फंगस की निराशाजनक स्थिति से गुजर रहे हैं। इस घातक बीमारी ने केन्द्र और राज्य सरकारों को हाई अलर्ट पर रखा हुआ है। कई राज्यों ने काले कवक को महामारी के रूप में घोषित किया है। फंगस इंफेक्शन नाक से शुरू होकर दिमाग तक फैल सकता है। इसका समय पर निदान और उपचार न कर इसे अगर अनुपचारित छोड़ दिया तो यह घातक साबित हो सकता है। गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश, तेलंगाना, उत्तरप्रदेश और राजस्थान में अब तक ब्लैक फंगस के

10 प्रतिशत कोविड-19 रोगियों में सामान्य इन्फ्लूएंजा जैसी बीमारी(आईएलआई) के लक्षण होते हैं और विशिष्ट उपचार के बिना बेहतर हो जाते हैं, जबकि 10-15 प्रतिशत रोगियों में अचानक सांस लेने में तकलीफ होती है और वे आपातकालीन कक्ष में पहुंच जाते हैं। ऐसे रोगियों में क्लैमाडिया निमोनिया शायद सक्रिय हो जाता है जब कोविड-19 रोगी की प्रतिरक्षा को कम करता है। इसमें जीवाणु में रोग जनक की प्रवृत्ति होती है। यदि सक्रिय हो जाता है, तो धमनी घनस्त्रता(कोगुलोपैथी) का कारण बनता है। जब मरीज की आर्टरीज(धमनियों) में 'नेक्रोसिस ऑफ टिशू'(उत्तक मृत होना) शुरु होता है तब ये फंगस नाक और पैरा-नेजल साइनस से होते हुए शरीर के भीतर प्रवेश कर जाती है। ऐसी स्थिति में दिल का दौरा, धमनियों में अचानक अवरोध और लकवा तक हो जाता है। नाक के जरिए ये आंख और ब्रेन तक पहुंचने पर ये रोग घातक हो सकता है। कोरोना मरीज को 5-10 दिनों के बीच अगर आंख, नाक या मुंह में कालापन के लक्षण दिखे तो तुरंत जांच करानी चाहिए और ईएनटी सर्जन से सलाह लेकर फंगस को सर्जरी द्वारा बाहर निकलवाना चाहिए।

**- डॉ. जयदीप डोगरा**
**वरिष्ठ मुख्य चिकित्साधिकारी, जयपुर**

हजारों मामले दर्ज किए गए हैं। मीडिया रिपोर्टों ने संकेत दिया कि इसकी मृत्युदर 50 प्रतिशत तक है। इसीलिए राजस्थान सरकार ने विशेष विमान भेजकर 14350 म्यूकोरमाईकोसिस की वैक्सीन वायल मंगवाई थी। सामान्य तौर पर सरकारी अस्पतालों में कोविड-19 रोगियों का इलाज करने वाले मेडिकल एक्सपर्ट्स कहते हैं कि निर्धारित कोविड उपचार के दौरान स्टेरॉयड के अंधाधुंध उपयोग के कारण ब्लैक फंगस हो सकता है, अनियंत्रित मधुमेह के रोगियों, ऑक्सीजन थेरेपी को भी ह्यूमिडिफायर के बहाने को भी इस रोग के लिए दोषी ठहराया जा रहा है। इस डरावने समय में फंगस और औद्योगिक ऑक्सीजन के उपयोग को भी कई अन्य कारणों में गिना जाता है। मगर ये सही आकलन नहीं है। सामान्य चिकित्सकों की धारणा के विपरीत डॉ. जयदीप डोगरा ने मेडिकल विश्लेषण और रिसर्च की है कि रोगी में नेक्रोसिस ऑफटिशु (मृत उत्तक) ब्लैक फंगस को आकृष्ट करता है, क्योंकि मरीज की आर्टरी में थ्रोम्बोसिस(खून का अचानक थक्का

बनने की प्रक्रिया) जो रोग की प्राथमिक घटना हो सकती है। रक्त का थक्का और इस मृत ऊतक पर वायुमंडलीय मौजूद कवक (ब्लैक फंगस) बढ़ता है। क्योंकि मरीज के उस अंग की प्रतिरोधक क्षमता समाप्त हो जाती है। ऐसी स्थिति में एंटी-फंगस दवाओं की सीमित मात्रा और अनुपलब्धता, उच्च लागत और रोग का खराब निदान मरीज को बहुत बड़ी परेशानी में डाल रहा है और चिकित्सा पद्धति पर सवाल खड़े कर रहा है। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ जनरल मेडिसिन में अपने शोध पत्र का हवाला देते हुए डॉ. डोगरा ने कहा कि बैक्टीरियल रोग जनक, 'क्लैमाइडिया नुमोनिया' के साथ कोरोना वायरस का सहअस्तित्व है और थ्रोम्बो-एम्बोलिज़्म के कारण होने वाली मौतों का एक प्रमुख कारण हो सकता है।

# लोकतांत्रिक मूल्यों का क्षरण

*विष्णु शर्मा हितैषी*

**बिहार** विधानसभा में पुलिस को बगैर वांरट के गिरफ्तारी शक्तियां देने वाले एक विधेयक को लेकर 23-24 मार्च को हुए हंगामे ओर ओडीशा विधानसभा में 3 अप्रेल को विपक्षी भाजपा सदस्यों द्वारा अध्यक्षीय आसन की तरफ चप्पल, ईयरफोन और कागज़ फेंकने की घटना से तो यही लगता है कि कठिन संघर्ष और कुर्बानियों से हासिल स्वतंत्रता और लोकतंत्र की फिक्र न हमारे जन प्रतिनिधियों को है और न ही सरकारों को। हमारे संविधान ने लोकतंत्रिक शासन के लिए ही तो निर्वाचित सदनों की संरचना की है। यदि ये सदन किसी मुद्दे पर विचार, बहस और तर्क के बाद किसी नतीजे पर पहुंचने की बजाय मारपीट, तोड़-फोड़ और धक्का-मुक्की के अखाड़े बन जाते हैं तो आम भारतीय का चिंतित होना लाजिमी है। बिहार विधानसभा में तो यहां तक हुआ कि सदन के भीतर अफरा-तफरी को नियंत्रित करने के लिए भारी तादाद में पुलिस को बुलाना पड़ा। जिसने विपक्ष के विधायकों से मारपीट की। यह असांविधानिक कृत्य था। निर्वाचित सदनों में जनप्रतिनिधियों को क्या अपनी सुरक्षा के विकल्प पर भी विचार करना होगा? जिन लोगों के हाथ जनप्रतिनिधियों पर उठे हैं, अपने गिरेबां में झांक कर देखना चाहिए कि क्या उन्हें ऐसा करना चाहिए था और क्या वे पुलिस सेवा में रहने लायक हैं भी? ऐसा शायद पहले कभी नहीं देखा गया कि एक महत्वपूर्ण मुद्दे पर विरोध जताने को लेकर विपक्षी दलों के विधायकों से बुरी तरह से धक्का-मुक्की और मारपीट की गई, उन्हें घसीटते हुए सदन से बाहर फेंका गया। महिला सदस्यों से भी जैसा बर्ताव किया गया, वह गरिमा, शालीनता और मर्यादा के खिलाफ था।

बिहार विशेष सशस्त्र पुलिस विधेयक-2021 किसी नए पुलिस बल के गठन को लेकर राज्य सरकार की ओर से सदन में नहीं लाया गया था, बल्कि इसका उद्देश्य करीब 129 वर्ष से सेवारत बिहार सैन्य पुलिस(बीएमपी) को विशेष सशस्त्र पुलिस बल के रूप में विकसित करना है। विधेयक को दोनों ही सदनों की स्वीकृति मिल चुकी है। सरकार का कहना है कि यह विधेयक सिर्फ सशस्त्र पुलिस के

आधुनिकीकरण के लिए लाया गया, ताकि वह भविष्य की चुनौतियों का ज़्यादा कुशलता से मुकाबला कर सके। जदयू-भाजपा की राज्य सरकार का पक्ष एक हद तक इसलिए ठीक भी माना जा सकता है क्योंकि बिहार में आज भी ऐसी हिंसक घटनाएं होती हैं, जिनसे मुकाबले में पुलिस प्राय: सफल नहीं हो पाती। बिहार हो अथवा और कोई राज्य आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए जान-माल की सम्पूर्ण सुरक्षा बेहद ज़रूरी है। बिहार में इस प्रकार की घटनाओं को रोकना और अपराधियों के बढ़ते हौसलों को पस्त करना आवश्यक है। इसीलिए मौजूदा बीएमपी को यदि कुशल, प्रशिक्षित और क्षेत्रीय पुलिस बल के रूप में विकसित किया जाता है तो वह सामयिक ही होगा। राज्य सरकार का मकसद भले ही अपराधों पर प्रभावी नियंत्रण हो, लेकिन विपक्ष को कहीं न कहीं ऐसा लगता है कि इस विधेयक के कानून बनने पर उसका उपयोग विपक्ष की आवाज़ को दबाने और उसके कार्यकर्त्ताओं को प्रताड़ित करने के लिए किया जाएगा।

हंगामे के बीच पारित विधेयक में सशस्त्र पुलिस को खास अधिकार दिए गए हैं। वह बिना वारंट के किसी के भी घर की तलाशी और मात्र संदेह के आधार पर किसी को भी पकड़ कर जेल में डाल सकेगी। विपक्ष को सर्वाधिक कचोटने वाला जो प्रावधान है, वह यह कि अदालतें भी ऐसे मामलों में तभी हस्तक्षेप कर पाएंगी, जब पुलिस बल उनसे ऐसा करने का आग्रह करेगा।

राज्य विधानसभा में विधेयक पेश करने से लेकर विधायकों से मारपीट तक के इस पूरे प्रकरण में मुख्यमंत्री नीतिश कुमार और उनकी पुलिस का रवैया अत्यंत निराशाजनक ही कहा जाएगा। यूं तो नीतिश कुमार राममनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण जैसे प्रबल लोकतंत्रवादी-समाजवादी नेताओं के पदचिह्नों पर चलने का दंभ भरते हैं किन्तु नए पुलिस कानून को सदन में लाने से पूर्व उसकी आवश्यकता और प्रावधानों पर विपक्षी दलों से सलाह-मशविरा को उन्होंने ज़रूरी नहीं समझा और मनमानी कर बैठे। यदि सदन में इस मुद्दे को लेकर कोई असहज स्थिति पैदा भी हुई तो सदन को कुछ समय के लिए स्थगित कर विपक्ष को बातचीत के लिए टेबल पर आमंत्रित किया जा सकता था किन्तु विरोधी विधायकों को सदन से बाहर करवा कर हंगामे के बीच विधेयक को पारित करवाना न केवल लोकतंत्र बल्कि उनकी राजनैतिक गरिमा के भी प्रतिकूल था। अब प्रश्न यह है कि सरकारों और पुलिस का ऐसा रवैया, ऐसे ही चेहरे के साथ आगे बढ़ा तो आम आदमी के लोकतांत्रिक और संवैधानिक अधिकारों के लिए कितनी जगह बचेगी और जिस आज़ादी और लोकतंत्र के लिए राष्ट्रपिता सहित अनेक लोगों ने बलिदान दिये, उसका क्या होगा? विधायकों व सांसदों से भी अपेक्षा की जाती है कि वे इस बात को गहराई से सोचें कि सदन में किसी भी विषय अथवा मुद्दे पर अपना पक्ष रखने के लिए उन्हें संविधान किस हद तक जाने की इज़ाजत देता है।

ओडीशा में अध्यक्ष के आसन की ओर कथित तौर पर चप्पल तब फेंकी गई जब सदन में बिना चर्चा के चंद मिनटों के भीतर ओडीशा लोकायुक्त(संशोधन) विधेयक को जल्दबाजी में पारित करवाया दिया गया। निर्वाचित सदनों में इस तरह का व्यवहार सरकार और विपक्ष के लिए मूंछ पर ताव देने जैसा हो सकता हैं किन्तु संविधान की आत्मा घायल करने वाला भी है। राजनैतिक दलों में इस पर चिंतन आवश्यक है।

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

#राजस्थान_सतर्क_है

# कोरोना की दूसरी लहर पहले से भी ज्यादा घातक है

90% खतरा
संक्रमित होने का

30% खतरा
संक्रमित होने का

5% खतरा
संक्रमित होने का

1.5% खतरा
संक्रमित होने का

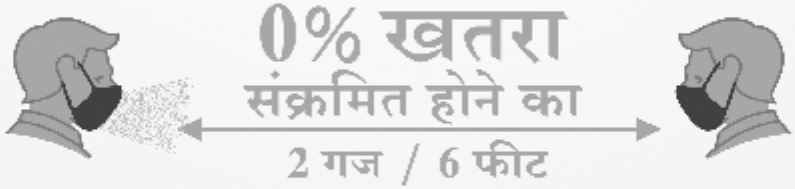

0% खतरा
संक्रमित होने का
2 गज / 6 फीट

राजस्थान संवाद

## मास्क और दूरी, बचाव के लिए जरूरी

45 वर्ष व उससे अधिक आयु वाले वैक्सीन जरूर लगवायें

टोल फ्री 104/108 | पहनिए मास्क | धोइए हाथ | रखिए दो गज दूरी | कोरोना वॉर रूम 181

मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना में 30 अप्रेल 2021 तक रजिस्ट्रेशन जरूर करवायें

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

## कोरोना का कहर

# दुनिया में 38 लाख से ज्यादा लोग मौत के शिकार

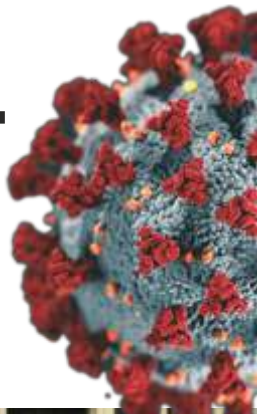

**विश्व** में कोरोना महामारी से जून 2002 के दूसरे सप्ताह तक 38 लाख से ज्यादा लोग काल का ग्रास बन चुके हैं। वहीं इसके संक्रमितों की संख्या बढ़कर 17.52 करोड़ से अधिक हो गई है। अमेरिका की जॉन हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी के विज्ञान एवं इंजीनियरिंग केन्द्र (सीएसएसई) की ओर से ताजा आंकड़ों के अनुसार दुनिया के 192 देशों एवं क्षेत्रों में संक्रमितों की संख्या बढ़कर 17 करोड़ 52 लाख से अधिक हो गई है।

## अमेरिका में सर्वाधिक मौतें

वैश्विक महाशक्ति माने जाने वाले अमेरिका में कोरोना वायरस का कहर की लहर थोड़ी धीमी जरूर पड़ी है हालांकि यहां संक्रमितों की संख्या 3.35 करोड़ के करीब पहुंच गई है, जबकि 5 लाख से अधिक मरीजों की इस महामारी से मौत हो चुकी है।

## भारत का तीसरे स्थान

दुनिया में कोरोना संक्रमितों के मामले भारत दूसरे स्थान पर और मृतकों के मामले में तीसरे स्थान पर है।

## ब्राजील दूसरे स्थान पर

ब्राजील संक्रमितों के मामले में अब तीसरे स्थान पर है। देश में कोरोना संक्रमण के मामले फिर से बढ़ रहे हैं और अभी तक इससे 1.72 करोड़ से अधिक लोग प्रभावित हुए हैं, जबकि इसके संक्रमण से 4.84 लाख से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। ब्राजील कोरोना से मौतों के मामले में विश्व में दूसरे स्थान पर है। संक्रमण के मामले में फ्रांस चौथे स्थान पर है, जहां कोरोना वायरस से अब तक 58 लाख से ज्यादा लोग प्रभावित हुए है, जबकि 1.10 लाख से अधिक मरीजों की मौत हो चुकी है। रूस में कोरोना वायरस से संक्रमितों की संख्या 51.20 लाख के पार पहुंच गयी है और 1.23 लाख से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है।

## ब्रिटेन व अन्य देश

ब्रिटेन में कोरोना वायरस प्रभावितों की कुल संख्या 44.16 लाख से अधिक हो गई है और 1.30 लाख से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। मृतकों के मामले में ब्रिटेन पांचवे स्थान पर है। तुर्की में कोरोना वायरस से अब तक 53.20 लाख से अधिक लोग संक्रमित हुए है और 50 हजार से अधिक लोगों की जान जा चुकी है। इटली में संक्रमितों की संख्या 39.35 लाख हो गई है और 1.20 लाख से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। स्पेन में इस महामारी से 35 लाख से अधिक लोग प्रभावित हुए है और करीब 80 हजार लोगों की मौत हो चुकी है। कोरोना संक्रमण के मामले में जर्मनी 10वें स्थान पर है और यहां इस वायरस की चपेट में आने वालों की संख्या 33 लाख को पार कर गई है और 83 हजार से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। (एजेंसी)

## कैसा लगा यह अंक

इस अंक में कौन सा आलेख आपको ज्यादा पसंद आया। आप किन विषयों पर आलेख पढ़ना ज्यादा पसंद करेंगे? किस विषय पर आप हमें अपना मौलिक आलेख, शोध, कविता, कहानी भेजना चाहेंगे। कृपया हमें लिखें। आपके रचनात्मक सुझावों का सदैव स्वागत होगा। *pankajkumarsharma2013@gmail.com*

# With Best Compliments

# RISHABH® BUS PVT. LTD.

2x1 2x2 3x2 A/C Buses, Tempo Travelers for Group/Marriages, Contact Nearest **RISHABH BUS PVT. LTD.** or Call : **98290 66369**

Cargo Service (Luggage & Parcel Service) : Door to Door Delivery, Expert in Intitutional Cargo Services : **98290-66369**

**UDAIPUR**

**Town Hall :** 7, Town Hall Road, Nr. ICICI Bank, Udaipur (Raj.) 313001
Tel. : 0294-2418369, 2419237, 2421918
**Sardarpura :** 4/5, Nr. Gumaniawala Petrol Pump, Sardarpura, Udaipur
Tel. : 0294-2422582, 2425024, 2528644
**RK Circle :** Shobhagpura Road, M. 9460630000, Parcel : 8302369369
**Udaipole :** S. No. 4, Under Hotel Sangam, Tel. : 0294-2417274, 2418183

**NEW DELHI**

**Filmistan :** 2, Shah Bhawan, Behind Filmistan Fire Station, Chamelion Rd., Near Idgah Gol Choraha, New Delhi
Tel. : 011-23519724, 23512299, **Parcel : 8010712160**
**Parcel :** Shop No. 6, Old Punjab Bus Stand, Old Delhi-6,
Tel. : 011-23981235, 23977301

ओपन रुफ डबल डेकर बस द्वारा

## उदयपुर दर्शन

किट्टी पार्टी, बर्थ-डे पार्टी आदि के लिए संपर्क करें

**+98290 66369, 97829 55222**

**Visit us : www.udaipursightseeing.com**

**JAIPUR-RISHABH TRAVELS** 0141-5103830, 5104830
RISHABH TRAVELS, D-57, Fateh Singh mkt. Opp. Hotel Rajputana Sheraton
**AJMER-RISHABH TRAVELS** 0145-2620064, 2620926
C/o KAMLA TRAVELS, 48, Kutchery Road
**BHILWARA-RISHABH TRAVELS** 01482-237037, 237034
C/o NAMEDEV TRAVELS, Near hotel Land Mark, Basant Vihar
**MUMBAI (VT office)-RISHABH TRAVELS** 022-22697921.22626841
C/o ASHAPURA TRAVEL, 62-66. Joshi Bldg, Sunder Goa Street. Nr. GPO. VT Fort
**HARIDWAR - GANESH YATRA SANGH** 08449914477, 01334-220633
MUMBAI (Andheri office)-RISHABH TRAVELS 022-66848686.26844454
C/o MUKESH TRAVELS, Wazir Glass Compound, Western Express highway
**BIKANER-RISHABH TRAVELS** 0151-2525105, 2209209
C/o MILAN TRAVELS, Near Hotel Mumal, Panchasati Circle

**JODHPUR-RISHABH TRAVELS** 0291-5103227. 5103226
C/o JAKHAR TRAVELS,Near Barkhatulla Stadium. Main Pat Road M. 99296-22229
**JHALAWAD-RISHABH TRAVELS** 07432-233135, 233330
C/o JAKHAR TRAVELS, Opp. Bus Stand
**JHALARAPATAN-RISHABH TRAVELS** 07432-240424, 240324
C/o OSHO TRAVEL, Opp. Bus Stand
**KOTA-RISHABH TRAVELS** 0744-2440313. 2401125
C/o JAKHAR TRAVELS, Opp. Allanddal Park, Keshavpura
**NATHDWARA-RISHABH TRAVELS** 02953-230058, 230320
C/o ASHAPURA TRAVELS. Opp. Private Bus Stand, Nr. Kadayata Bhawan
**RAJSAMAND-RISHABH TRAVELS** 02952-225392, 223281
C/o DARSHAN TRAVELS, Near Ramdev Temple
**PILANI-RISHABH TRAVELS** 01596-245949. 245249. 9413366999
C/o AJAYRAJ TRAVELS. Opp. Bus Stand

**E-Mail : info@rishabhbus.com** **Web : www.rishabhbus.com**

# ऑफलाइन से ऑनलाइन होती ज़िंदगी

*डॉ. वर्षा शर्मा*

**परिवर्तन** सृष्टि का नियम है। बदलते समय के साथ समायोजन एवं सामंजस्य बनाए रखने के लिए परिवर्तन आवश्यक है, परंतु यह परिवर्तन इतना भी अधिक ना हो कि हम अपने मूल उद्देश्य से ही भटक जाएं। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास हेतु परम आवश्यक प्रक्रिया है समाजीकरण। समाजीकरण की प्रक्रिया के मुख्य एजेंट के रूप में परिवार, आस-पड़ोस, समाज, विद्यालय आदि की भूमिका सदा अपेक्षित एवं उल्लेखनीय रही है। आधुनिकीकरण की दस्तक जीवन के हर पहलू पर पड़ी और हमारे रिश्ते भी इससे अछूते नहीं रहे। दैनिक जीवन की छोटी-मोटी क्रियाएं ऑफलाइन से कब ऑनलाइन हो गई पता ही नहीं चला। कुछ समय की जरूरत थी, कुछ हमारी सुविधा, कुछ तकनीकी विकास, कुछ आसान इंटरनेट की उपलब्धता। कारण चाहे जो भी रहा लेकिन इस तथ्य को झुठलाया नहीं जा सकता है कि आज के सामाजिक संचार का एक बड़ा भाग ऑनलाइन संचार पर निर्भर हो गया है। आंकड़ों की बात करें तो डिजिटल इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक सोशल मीडिया यूजर्स की संख्या 2018 में 326.1 मिलियन थी जो 2020 में बढ़कर 400 मिलियन हो गई।

असंतुलित ऑनलाइन सामाजिक साइट्स का प्रयोग हमारे युवा वर्ग को क्या वाकई सामाजिक बना रहा है ? यह सोचने का विषय है।

दुविधा यह है कि हमारे युवा सामाजिक साइट्स पर अपने स्टेटस, फॉलोअर्स, लाइक-डिसलाइक आदि को देखने में इतना व्यस्त है कि वह अपने वास्तविक सामाजिक संबंधों के सही निर्वहन में असक्षम है। यह स्थिति आज के बदलते सामाजिक परिवेश की दुखद तस्वीर प्रस्तुत कर रही है। जहां पर हम 'कनेक्टेड बट अलोन...।' की स्थिति को महसूस करने के लिए मजबूर हैं। जाने-अनजाने हम अपनी प्राचीन भारतीय सामाजिक संचार परंपरा से दूर होते जा रहे हैं। यह तस्वीर बहुत ही आम है, जहां पर पांच से सात व्यक्तियों का समूह होने पर भी किसी भी प्रकार का वास्तविक सामाजिक संचार नहीं होता। समूह के सभी सदस्य अपने मोबाइल फोन में व्यस्त नजर आते हैं। जैसे वृक्ष की हरियाली उस बात पर निर्भर है कि वह अपनी जड़ों से जुड़ाव रखें, ठीक उसी प्रकार यदि हम अपने सामाजिक संबंधों में मधुरता की हरियाली चाहते हैं तो जड़ों से जुड़ाव बहुत ज़रूरी है। यकीन मानिए ऑनलाइन संचार किसी भी मायने में ऑफलाइन संचार की जगह नहीं ले सकता। विचारणीय यह है कि सामाजिक साइट्स का प्रयोग इस तरीके से हो कि वे आपके संबंधों की गुणवत्ता को बढ़ाएं ना कि सोशल मीडिया एडिक्शन की तरफ आपको धकेलें। जहां पर सुडो आईडेंटिटी, ऑनलाइन गेमिंग एडिक्शन, ऑब्सेसिव ऑनलाइन स्टेटस चेकिंग, डिपेंडेंसी ऑन इंटरनेट, कुसुमायोजित दैनिक जीवन की गतिविधियां आदि शामिल हैं।

## समस्यात्मक व्यवहार जिन पर ध्यान देने की जरूरत है

- सोशल मीडिया का अनियंत्रित प्रयोग।
- सोशल मीडिया पर निर्भरता 'ऑनलाइन ऑफलाइन संचार में असंतुलन'।
- सोशल मीडिया हेतु एडिक्टिव टेंडेंसी का विकास।
- इंटरनेट इस्तेमाल की बाध्यता।
- अत्यधिक स्क्रीन टाइम।
- दैनिक जीवन का एक बड़ा हिस्सा ऑनलाइन होना।

अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन ने अपने नए वर्गीकरण डीएसएम-5 में ऑनलाइन क्रियाओं की अतिसंवेदनशीलता को देखते हुए इसे एक नए मानसिक विकार के रूप में वर्गीकृत किया है।

## सावधानियां एवं उपाय

- अपने ऑनलाइन एवं ऑफलाइन स्टेटस में समायोजन बनाएं।
- यह जानने की कोशिश करें कि क्या सामाजिक साइट्स आपकी सामाजिक संबंधों की मधुरता को बढ़ा रही है।
- यदि आप स्वयं की इंटरनेट पर निर्भरता को महसूस कर रहे हैं या उसके बिना रह नहीं सकते तो सावधान हो जाइए।
- अपनी अति ऑनलाइन गतिविधियों को नियंत्रित करें।
- आवश्यकता होने पर मनोवैज्ञानिक परामर्श अवश्य लें।

**( लेखिका एमएलएसयू के मनोविज्ञान विभाग में सहायक आचार्य हैं )**

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री, राजस्थान

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

#राजस्थान_सतर्क_है

# जीतेगा राजस्थान, हारेगा कोरोना

सभी प्रदेशवासियों को

# राजस्थान दिवस 30 मार्च

## की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रिय प्रदेशवासियों,

**राजस्थान दिवस**– वीरता, शौर्य, दृढ़ इच्छाशक्ति, त्याग व बलिदान को नमन करने और गौरवान्वित होने का दिन है।

विश्वव्यापी महामारी 'कोविड-19' के कारण राजस्थान दिवस का पर्व सार्वजनिक रूप से नहीं मना पाएंगे। सरकार व प्रदेशवासियों ने मिलकर इस महामारी का प्रभावशाली तरीके से सामना किया। जिसको देश और विदेश में सराहा गया है। पर खतरा अभी टला नहीं है। हमें पूरी सावधानी बरतनी है। कोरोना की गाइडलाइन का पालन करने के साथ-साथ अपनी बारी आने पर वैक्सीन अवश्य लगवायें। कोरोना से हारना नहीं उसे हराना है।

**राजस्थान दिवस** पर मैं आप सभी के सुखद व स्वस्थ भविष्य की कामना करता हूं। आप सब से अपील है कि गर्व के इस पर्व को हमें घर पर ही उत्साह से मनाना है।

– अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

**Rahul R. Choudhary**
Mob. : 96944 46002

**Rajesh B. Choudhary**
Mob. : 98872 42220

# Sharda Medical Store

## शारदा मेडिकल स्टोर

Ph.: 0294-2429289, 2413372 (S)

शॉप नं. 1-2, श्रीनाथ प्लाजा, हॉस्पीटल रोड, उदयपुर ( राज. )

# इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

## मेष

पारिवारिक एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी, अत्यधिक क्रोध एवं उत्तेजना से बनते काम बिगड़ सकते हैं, पूर्व नियोजित योजनाओं में बाधाएं आ सकती हैं, समझदारी एवं विवेक से काम लें, स्थान परिवर्तन संभव, कार्य के प्रति ऊर्जावान बने रहें।

## वृषभ

परिस्थितियों में परिवर्तन, विपरीत परिस्थितियों में भी मनोवांछित कार्य सम्भव। आय कम, खर्च ज्यादा रहेगा। भाई-बन्धुओं से मतभेद हो सकता है, स्वभाव में तीक्ष्णता एवं उत्तेजना से बनते कार्यों में अड़चनें आ सकती हैं, दाम्पत्य जीवन सुखद। विद्यार्थी वर्ग को प्रतियोगिता में सफलता।

## मिथुन

आर्थिक क्षेत्र में विकास के अवसर बढ़ेंगे, जल्दबाजी में कोई फैसला न लें वरना धन-हानि संभव है। व्यर्थ की यात्राओं से परेशानी और वात एवं पित्त में वृद्धि हो सकती है, खान-पान व्यवस्थित रखें, साझेदारी में काम का अवसर मिल सकता है।

## कर्क

आय बाधित रहेगी, नियोजित खर्च बढ़ेंगे, मन-बुद्धि में हमेशा भ्रम की स्थिति, छोटी-छोटी बातों पर क्रोध, स्वास्थ्य सम्बंधी समस्या हो सकती है। मित्र वर्ग से सावधानी रखें, किसी नवीन कार्य में धन का नियोजन न करें, दाम्पत्य जीवन में आंशिक तनाव संभव।

## सिंह

माह के पूर्वार्द्ध में लाभ का दौर, परन्तु उत्तरार्द्ध में खर्च बढ़ेगा। सिर-दर्द तथा रक्त विकार हो सकता है, जिससे बैचेनी एवं क्रोध बढ़ सकता है। संतान एवं परिवार के मध्य सहयोग का अभाव, व्यवसायिक क्षेत्र में अस्थिरता का सामना करना पड़ सकता है।

## कन्या

कार्य क्षेत्र में महत्वपूर्ण लोगों के साथ संपर्क बनेंगे, नवीन कार्य योजना बनेगी, परन्तु क्रियान्वयन में विलंब होगा। स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि हो सकती है, माह के उत्तरार्द्ध में आर्थिक उलझनें आ सकती हैं, मन में अशान्ति एवं असन्तुष्टि से घरेलू एवं व्यवसायिक दिक्कतें हो सकती हैं।

## तुला

लाभ के लिए किये गए सभी प्रयास सार्थक, किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के सहयोग से कार्य क्षेत्र में सफलता मिलेगी। सरकारी क्षेत्र में सफलता के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। माता-पिता से मतभेद हो सकते हैं, यात्रा में सावधानी बरतें।

## वृश्चिक

भाग्य में अवरोध तथा पारिवारिक एवं आर्थिक उलझनों के कारण मन व्यथित रहेगा। नियोजित योजनाओं में विघ्न किन्तु आय के स्रोत बने रहेंगे।

## धनु

स्वास्थ्य में गड़बड़ी के साथ खर्च बढ़ेगा। संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगा। गंभीर गुप्त रोग की शुरुआत हो सकती है, नौकरी पेशा के लिए माह कठिन रहेगा।

## मकर

किसी नवीन कार्य योजना पर विचार-विमर्श हो सकता है, दूरस्थ यात्राएं होंगी, शरीर में चोट आदि का भय रहेगा। धार्मिक कार्यों में प्रवृत्ति बनेगी, जिससे मन शान्त रहेगा। आर्थिक उलझनों के कारण व्यथित हो सकते हैं। स्वास्थ्य में परेशानी सिर दर्द, आंखों में कष्ट संभव।

## कुम्भ

व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियां, प्रतिष्ठित लोगों से मेल-जोल रखें, रुके हुए कार्यों की सिद्धि संभव, संतान पक्ष से चिन्ता रहेगी। परिवार में शुभ एवं धार्मिक कार्य सम्पन्न होंगे, भूमि एवं जायदाद सम्बन्धित विवादों को लेकर सतर्क रहें।

## मीन

परिश्रम एवं पुरुषार्थ की महत्ती आवश्यकता है। दिवास्वप्न कार्य बिगाड़ सकते हैं परन्तु किसी निकट सहयोगी की सहायता से बिगड़े काम सुधरेंगे भी। साझेदारी नुकसान दे सकती है, किसी नये स्थान पर जाने के अवसर प्राप्त होंगे, संतान पक्ष कष्टदायी हो सकता है।

प्रत्यूष

प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें

75979 11992,
94140 77697

# कोठारी पुनः यूसीसीआई अध्यक्ष

## संजय सिंघल वरिष्ठ उपाध्यक्ष और विजय गोधा भी निर्विरोध उपाध्यक्ष

**उदयपुर।** उदयपुर चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री की वार्षिक साधारण सभा की बैठक वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से 13 जून को पीपी सिंघल ऑडिटोरियम में हुई, जिसमें वर्तमान अध्यक्ष कोमल कोठारी को आगामी सत्र 2021-22 के लिए पुनः निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया। यूसीसीआई के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर संजय सिंघल और उपाध्यक्ष पद पर विजय गोधा पुनः निर्विरोध निर्वाचित किए गए। महिला सदस्य वर्ग में रूचिका गोधा तथा हसीना चक्कीवाला निर्विरोध चुनी गई। इससे पहले वार्षिक सभा में महासचिव डॉ. अंशु कोठारी ने विगत साधारण सभा की बैठक के मिनिट्स सदन में रखे जिनका अनुमोदन किया गया। कोषाध्यक्ष संदीप बापना ने वित्तीय वर्ष 2020-21 का वार्षिक ऑडिटेड लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। जिसकी पुष्टि के

बाद वर्ष 2021-22 के बजट का अनुमोदन किया गया। यूसीसीआई के संरक्षक अरविन्द सिंघल ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष को समस्त कार्यकारिणी सदस्यों की ओर से बधाई देते हुए उद्योग एवं व्यवसाय की समस्याओं के निराकरण के लिए एक टीम की भांति साझा प्रयास करने का मार्गदर्शन दिया।

नवनिर्वाचित कार्यकारिणी की 18 जून को अध्यक्ष कोमल कोठारी की अध्यक्षता में बैठक हुई। जिसमें संदीप बापना को मानद महासचिव व सुनील अग्रवाल को मानद कोषाध्यक्ष तथा कार्यकारिणी समिति में डॉ. सतीशचन्द्र जैन एवं आशीषसिंह छाबड़ा को सदस्य मनोनीत किया गया। वरिष्ठ उपाध्यक्ष संजय सिंघल ने भविष्य में उद्योग की समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करने का आव्हान किया।

# सिक्योर के सहयोग से अनन्ता में ऑक्सीजन प्लांट

**राजसमंद।** कोरोना महामारी के संक्रमण से मुकाबले के लिए जिले के एकमात्र मेडिकल कॉलेज अनन्ता इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल कॉलेज साइंसेज एण्ड रिसर्च सेन्टर में सिक्योर मीटर के सहयोग से संचालित ऑक्सीजन प्लांट का उद्घाटन जिला कलक्टर अरविन्द पोसवाल ने किया। सिक्योर मीटर ने अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए अनन्ता अस्पताल में 36 से 40 सिलेण्डर प्रतिदिन की क्षमता का ऑक्सीजन प्लांट लगवाया है। रजिस्ट्रार डॉ. नितिन शर्मा ने बताया कि इससे काफी हद तक ऑक्सीजन की किल्लत दूर होगी। सिक्योर मीटर के एमडी सुकेत सिंघल ने बताया कि सिक्योर मीटर हमेशा से ही सामाजिक कार्यों में अग्रणी रहा है, अनन्ता अस्पताल के अलावा संभाग में लगभग 4 जगह और इस तरह के प्लांट लगवाए गए हैं। इस अवसर पर अनन्ता के अध्यक्ष नारायण सिंह राव, डॉ. भगवान विश्नोई, एसडीएम अभिषेक गोयल, नाथद्वारा मंदिर मण्डल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी जितेन्द्र ओझा भी उपस्थित थे।

# श्री सीमेंट ने दिए ऑक्सीजन कंसंट्रेटर

**जयपुर।** श्रीसीमेंट के प्रबंध निदेशक एच. एम. बांगड़ ने पिछले दिनों जयपुर में राज्य सरकार को 50 ऑक्सीजन कंसंट्रेटर भेंट किए। इस अवसर पर जयपुर विकास प्राधिकरण के आयुक्त गौरव गोयल, श्रीसीमेंट के उपाध्यक्ष नरीप बाजवा भी उपस्थित थे। पूर्णकालिक निदेशक पी. एन. छंगाणी, अध्यक्ष संजय मेहता एवं संयुक्त उपाध्यक्ष अरविन्द खींचा ने बताया कि कम्पनी राष्ट्र सेवा के प्रति अपने सामाजिक उत्तरदायित्व को लेकर सजग, समर्पित और दृढ़ है।

## इजहार संयोजक

**उदयपुर।** एनएसयूआई के राष्ट्रीय सोशल मीडिया के चेयरमैन आदित्य भगत ने इजहार हुसैन को राष्ट्रीय संयोजक मनोनीत किया है।

## हर्षमित्र महामंत्री मनोनीत

**उदयपुर।** समग्र जैन समाज की संस्था महावीर युवा मंच की कार्यकारिणी में हर्षमित्र सरूपरिया को महामंत्री मनोनीत किया गया है, मुख्य संरक्षक प्रमोद सामर होंगे। अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि उपाध्यक्ष अजय पोरवाल, संजय नागौरी, मनोज मुणेत तथा विक्रम भंडारी, मंत्री डी. के. मोगरा, नरेन्द्र जैन, राजेश जैन तथा सुनील पगारिया व कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश पोरवाल होंगे।

## नारायण सेवा में 43 यूनिट रक्तदान

**उदयपुर।** पीड़ितों की सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है। यह बात 14 जून को नारायण सेवा संस्थान में आयोजित रक्तदान शिविर का उद्घाटन करते हुए महाराणा प्रताप एयरपोर्ट डायरेक्टर नंदिता भट्ट ने कही। विशिष्ट अतिथि रोटरी क्लब ऑफ उदयपुर मेवाड़ के संरक्षक हंसराज चौधरी व 92 बार रक्तदान कर चुके रवीन्द्रपाल सिंह कप्पू थे। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने स्वागत किया। शिविर के दौरान 43 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया। रविन्द्रपाल सिंह कप्पू, चंदन माली, बरकतउल्ला खान, रोहित जोशी, डॉ. भरत सिंह राव, आयुष अरोड़ा, कपिल दया, हितेश व्यास, आर सी मीणा, दीपक खंडेलवाल को प्रशस्ति पत्र, पगड़ी, दुपट्टा, शॉल व स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में निदेशक वंदना अग्रवाल, पलक अग्रवाल ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन ऐश्वर्य त्रिवेदी ने किया।

## तारा संस्थान ने मनाया स्थापना दिवस

**उदयपुर।** तारा संस्थान के स्थापना दिवस पर 11 जून को सादगीपूर्ण कार्यक्रम आयोजन हुआ। संस्थापक कल्पना गोयल ने बताया कि आज ही के दिन तारा संस्थान की नींव रखी गई। तत्पश्चात् तारा नेत्रालय नाम से हॉस्पीटलों की स्थापना की गई। हॉस्पीटलों में रोगियों के नि:शुल्क ऑपरेशन किये जा रहे हैं। अब तक 85682 मोतियाबिन्द ऑपरेशन हो चुके हैं। संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी दीपेश मित्तल ने बताया कि उत्तरोत्तर प्रगति के साथ तारा संस्थान ने एक वृद्धाश्रम की स्थापना भी की है। जिसमें इस समय 85 लोग निवास कर रहे हैं।

## मिल्खासिंह दो बार उदयपुर आए थे

**उदयपुर।** फ्लाइंग सिक्ख के नाम से मशहूर एथलीट मिल्खासिंह का 18 जून को निधन हो गया। वे दो बार उदयपुर भी आए थे। सन 2005 में वीसी जैन मेमोरियल पुस्तकालय के उद्घाटन व 2014 में महाराणा मेवाड़ पब्लिक स्कूल व महाराणा मेवाड़ विद्या मंदिर स्कूल के वार्षिक समारोह में बतौर मुख्य अतिथि आए थे। उन्होंने यहां बच्चों को अपने फ्लाइंस सिख बनने की कहानी सुनाते हुए उन्हें जीवन में संघर्ष से हार न मानने की प्रेरणा दी थी।

## फतहसिंह राठौड़ बने वाइस चेयरमैन

**उदयपुर।** राजस्थान मुक्केबाजी संघ के अध्यक्ष फतहसिंह राठौड़ को भारतीय मुक्केबाजी संघ के यूथ कमीशन का वाइस चेयरमैन बनाया गया है। नरेन्द्र निर्वाण को रेफरी व जजेस कमिशन का चेयरमैन नियुक्त किया गया है।

## कोरोना से उबरने में सहायक बने मीडिया

**उदयपुर।** सुविवि के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की ओर से विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस पर कोरोना महामारी एवं टीकाकरण जागरूकता अभियान में 'मीडिया की भूमिका' विषय पर ऑनलाइन कार्यक्रम हुआ। मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार में सूचना आयुक्त नारायण बारेठ थे। बारेठ ने कहा कि वर्तमान में कोरोना के कारण हर तरफ निराशा का माहौल है। मीडिया इससे उबरने में सहायक हो सकता है। सुविवि के कुलपति प्रोफेसर अमेरिका सिंह, प्रबन्ध अध्ययन संकाय निदेशक प्रो. हनुमान प्रसाद, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के प्रभारी विभागाध्यक्ष डॉ. कुंजन आचार्य, प्रो. सीमा मलिक आदि भी मौजूद थे।

## अजय आचार्य 'जार' के जिलाध्यक्ष

**उदयपुर।** जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान(जार) की 14 जून को हुई बैठक में 'पुकार' साप्ताहिक के सम्पादक अजयकुमार आचार्य को सर्वसम्मति से उदयपुर इकाई का अध्यक्ष चुना गया। इसके लिए जार के प्रदेशाध्यक्ष हरिवल्लभ मेघवाल एवं प्रदेश महासचिव दीपक शर्मा ने स्वीकृति दी थी। आचार्य ने कहा कि आने वाले समय में 'जार' संगठन को भी अधिक सक्रिय कर पत्रकारों के हितार्थ मजबूत बनाया जाएगा और सदस्यता अभियान प्रारंभ किया जाएगा। निवर्तमान अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने सभी का आभार व्यक्त किया। पत्रकार समुदाय ने आचार्य के मनोनयन का स्वागत किया है।

## धनपाल संभागीय, अरुण जिलाध्यक्ष

**उदयपुर।** अखिल भारतीय वैश्य महासंगठन के संभागीय अध्यक्ष के रूप में धनपाल गांगावत व जिलाध्यक्ष के रूप में अरूण लुणदिया की नियुक्ति की गई। लुणदिया ने कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए अजय बडाला महामंत्री, रमेश राठी वरिष्ठ उपाध्यक्ष, अनिल गुप्ता उपाध्यक्ष, पवन चंडालिया मंत्री, प्रसन्न कलावत कोषाध्यक्ष, भूपेन्द्र मेहता संगठन मंत्री, दिनेश गोठवाल की प्रचार प्रसार मंत्री के रूप में नियुक्ति की है।

## हुंडई की नई एसयूवी अल्कजार लॉन्च

**उदयपुर।** हुंडई मोटर इंडिया ने उदयपुर स्थित अधिकृत डीलर रामजी हुंडई में अपनी नई एसयूवी अल्कजार को लॉन्च किया है। इस अवसर पर कम्पनी के प्रतिनिधि दामोदर पटेल, युद्धवीरसिंह शक्तावत, कुलदीप पटेल और भूपेश पटेल मौजूद थे। इसकी एक्स शोरूम कीमत 16.30 लाख से शुरू है। कंपनी का अल्कजार मॉडल छह और सात सीटों के साथ उपलब्ध है। कम्पनी के एमडी एस.एस. किम ने कहा कि अल्कजार के बाद कम्पनी की बिक्री में एसयूवी की हिस्सेदारी बढ़कर 50 फीसदी पर पहुंचने की उम्मीद है।

# उदयपुर क्षेत्र : संवेदना

श्री इंदरसिंह जी राठौड़ (पूर्व अध्यक्ष इंटक-पीएचईडी) का 30 अप्रेल को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी गोपाल कुंवर राठौड़, पुत्र शंभूसिंह, पूर्व पार्षद फतहसिंह, रघुवीरसिंह व पुत्री श्रीमती भारती कंवर व उनका समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

श्री रमेशचन्द्र जी शर्मा का 21 मई 2021 को हृदयगति रूक ने से आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पत्नी श्रीमती मनोरमा रानी, पुत्र संजीव, नीरज, राजीव, पंकज, प्रशांत एवं प्रसून तथा उनका समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

श्रीमती पुष्पाकंवर जी हाड़ा (धर्मपत्नी स्व. ठा. प्रतापसिंह जी हाड़ा) का 14 मई को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल डॉ. प्रसून, डॉ. सुमन-महावीर सिंह हाड़ा, प्रतिभा-नगेन्द्रसिंह गहलोत सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

श्री सोहनलालजी देवपुरा (सेवानिवृत्त मुख्य अभियंता) का 2 मई को निधन हो गया। वे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पादेवी, पुत्र डॉ. मुकेश देवपुरा, पुत्री माधवी लड्ढा व पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

श्रीमती शांतिदेवी जी सुहालका (धर्मपत्नी स्व. श्री भंवरलाल जी सुहालका) का 18 मई 2021 को देवलोकगमन हो गया। धर्मपरायणा श्रीमती सुहालका अपने पीछे शोकाकुल शिव हर्ष, अनिल, रोहन, संकल्प, प्रीतिश व रिदांश का समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

श्रीमती जशोदा देवी बागड़ी का निधन 15 मई को हो गया। वे अपने पीछे शोकग्रस्त पुत्र मनोज बागड़ी, पुत्रियां विजयलक्ष्मी सोलंकी, सुमित्रा चौहान, आशा चौहान व रेखा दाहिमा तथा पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का विशाल एवं समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

जनाब अब्दुल सलाम साहब का इंतेकाल 14 मई को हो गया। वे अपने पीछे गमज़दा पत्नी श्रीमती जाकिरा सलाम, पुत्र ताहिर अहमद, पुत्रियां रोशन, परू, जहां व शहनाज तथा भाई-भतीजों, पौत्र, दोहित्र-दोहित्रयों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

श्री ग्यारसीलाल जी सिपरिया (जैन) का 10 मई को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकग्रस्त धर्मपत्नी श्रीमती विमला देवी, पुत्र अजीत व सुनील, पुत्रियां रेखा व सरोज सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

जनाब शेख अब्बास अली कुराबड़ वाला का 10 मई को इंतेकाल हो गया। वे अपने पीछे गमज़दा पुत्र अली कौसर, हुजेफा, पुत्रियां सकीना दसोरवाला, नफीसा बंदूकवाला, मुनीरा ऊनवाला व उनका संपन्न परिवार छोड़ गए हैं। वे 91 वर्ष के थे।

श्री छोगालाल जी दया का 7 मई को हृदयगति रूक जाने से निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती फुलवा देवी, पुत्र नरेन्द्र, सुरेश, संजय व पुत्री चंदादेवी सहित पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों, भाई-भतीजों व बहिनों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

श्री जगदीशलाल जी अग्रवाल (हिन्दुस्तान सेनेट्री स्टोर) का 1 मई को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकग्रस्त पुत्र संजय व अजय अग्रवाल, पुत्री उर्मिला गोयल, डॉ. मीता अग्रवाल तथा उनका समृद्ध व संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

श्री गजेन्द्र प्रकाश शर्मा का 4 मई को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल माता श्रीमती नंदकुवर, धर्मपत्नी श्रीमती लीला देवी, पुत्र कपिल व संजय शर्मा सहित पौत्र-पौत्रियों व भाई-भतीजों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

श्री ख्यालीलाल जी जैन (पारख) का आकस्मिक स्वर्गवास 4 मई को हुआ। वे अपने पीछे शोकमग्न पत्नी श्रीमती पुष्पादेवी, पुत्र सोमेश व नितिन, पुत्र रानू सिंघवी तथा भाई-भतीजों का वृहद परिवार छोड़ गए हैं।

देव वरण शोध संस्थान के संस्थापक एवं ज्योतिष शास्त्र के प्रकाण्ड पंडित श्री निरंजन जी भट्ट (68) का 5 मई 2021 को निधन हो गया। उन्हें कई राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सम्मान मिले। वे अपने पीछे शोककुल पुत्र चैतन्य व चंचलेश का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

सुश्री सरोज चौधरी का 15 मई को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल भाई कमलसिंह, बहनें मंजू चव्वाण, शीला भादविया, विनिता कोठारी व रीना जैन और उनका भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

श्रीमती निशा माथुर का 16 मई को असामयिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल पति श्री सुनील माथुर पुत्र विभव, गर्वित माथुर व भाई-भतीजों का संपन्न परिवार छोड़ गई हैं।

श्री कैलाशचन्द्र जी बोर्दिया का 9 जून को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती कंचन, पुत्र संदीप व दीपक बोर्दिया, पुत्री नीता नाहर सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का विशाल परिवार छोड़ गए हैं।

श्रीमती मोहन देवी परिहार का 1 मई को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पति श्री गोपीकृष्ण परिहार, पुत्र अमरसिंह, डॉ. प्रेमसिंह, डॉ. महावीर सिंह, डॉ. बलवंतसिंह व पौत्र-पौत्रियों का संपन्न व समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

ठाकुर मेजर रघुनाथ सिंह जी शक्तावत का 10 मई को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल पुत्र युद्धवीरसिंह शक्तावत, पौत्र शिवांश सिंह सहित भाई-भतीजों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

प्रमुख व्यवसायी श्री मनोरहलालजी हाथी (जैन) का 28 अप्रेल को निधन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती मीठू देवी, पुत्रियां संगीता व ममता सहित भाई-भतीजों, पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का विशाल समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

युवा उद्यमी श्री अनूपजी धोका का 11 मई को आकस्मिक देहांत हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल माता लीलावतीजी, धर्मपत्नी कपिला धोका व पुत्री वंदिनी व शौर्यन सहित भाई-भतीजों का वृहद परिवार छोड़ गए हैं।

श्री अजयकुमार जी टाया का 8 जून को आकस्मिक देहांत हो गया। वे अपने परिवार में शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती सुमनदेवी, पुत्र क्षितिज टाया, पुत्री कृतिका सहित भाई-बहिनों का संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

श्रीमती रतनीदेवी मेघवाल का 29 अप्रेल को स्वर्गवास हो गया। अपने पीछे शोकग्रस्त सासुमां धनीबाई, पति डालचंद मेघवाल, पुत्र पंकज, पुत्रियां जमुना, सुनीता, गिरिजा, कुसुम तथा उनका संपन्न व समृद्ध परिवार छोड़ गई हैं।

श्रीमती कौशल्या मूंदड़ा का 5 मई को देहावसान हुआ। वे अपने पीछे शोकाकुल पति राकेश मूंदड़ा, पुत्रियां निधि मोहता व कृष्णा सहित जेठ-जेठानियों, भाई-भतीजों का वृहद परिवार छोड़ गई हैं।

समाजसेवी राजस्थान एग्रीकल्चर डिपो के स्वामी, विभिन्न संस्थाओं के संस्थापक एवं राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित डॉ. यशवंतसिंह जी कोठारी का 18 मई 2021 को देवलोकगमन हो गया। समाजसेवा के क्षेत्र में उन्हें विविध पुरस्कारों से नवाजा गया था। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा, पुत्र विपिन व नितिन कोठारी, पुत्री उर्वशी सिंघवी सहित पौत्र-पौत्रियों-दोहित्र-दोहित्रियों तथा भाई-भतीजों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के पूर्व कुलाधिपति प्रो. भवानी शंकर गर्ग का 13 मई को देहावसान हो गया। वे 93 वर्ष के थे। वे कुछ समय तक भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ नई दिल्ली के अध्यक्ष भी रहे। पंडित जर्नादन राय नागर द्वारा स्थापित विद्यापीठ की सेवाओं में वे 1948 से संलग्न हुए। वे अपने पीछे ज्येष्ठ पुत्रवधु निर्मला, पुत्र राजीव, पुत्रियां स्नेहलता, भारती व अंजना समेत पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

राजस्थान अन्य पिछड़ा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विजयसिंह पंवार का 26 मई 21 बुधवार को निधन हो गया। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, विधानसभाध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास, सीडब्ल्यूसी सदस्य रघुवीर सिंह मीणा, लालसिंह झाला, गोपाल कृष्ण शर्मा व पंकज शर्मा ने गहरा शोक व्यक्त किया है। डॉ. पंवार अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती बीनासिंह, पुत्री दीपा तथा पुत्र हर्षवर्धन सहित भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

पूर्व सांसद विधायक एवं कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जयनारायण जी रोत का 5 मई को देहावसान हो गया। उनके निधन पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, विधानसभाध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी, सीडब्ल्यूसी सदस्य रघुवीरसिंह मीणा, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास सहित अनेक नेताओं, कार्यकर्ताओं ने शोक व्यक्त किया। वे 1967 से 1977 तक धरियावद विधानसभा क्षेत्र से विधायक रहे। 1980 में लोकसभा के लिए चुने गए। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र भूपेश, पंकज व पवन रोत तथा पुत्री डॉ. नीता सहित समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं।

पत्रकार श्री सनत जोशी के भ्राता द्वय श्री जयंतकुमार जी व श्री महेशकुमार जी जोशी का क्रमश: 13 मई व 27 मई को देवलोकगमन हो गया। श्री जयंत जी अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती कल्पना व पुत्र अभिषेक तथा स्व. महेश जी अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती शोभा, पुत्र पुनीत, चयन व मनोज्ञ सहित भाई-भतीजों व बहिनों का समृद्ध व संपन्न परिवार छोड़ गए हैं।

महात्मा गांधी की गोद ली बेटी उमिया बेन के बेटे शिवाजी नगर निवासी प्रताप नारायण(91) का 3 जून को निधन हो गया। उमिया बेन और शंकरलाल अग्रवाल का विवाह 1929 में गुजरात के साबरमती आश्रम में हुआ था। यह अंतरजातीय विवाह था। जिस वक्त उमिया अजमेर जेल में बंद थी। 2 अक्टूबर 1930 को अजमेर में ही बेटे को जन्म दिया। गांधीजी ने दोहिते का नाम प्रताप नारायण रखा। उनका अंतिम संस्कार अशोक नगर मोक्षधाम पर किया गया। वह आदित्य बिड़ला ग्रुप के सीनियर प्रेसीडेंट भी रह चुके हैं। उनके दो पुत्रियां दीपा गर्ग, नीरा गुप्ता एवं पुत्र संजय अग्रवाल हैं।

श्रीमती कमलादेवी सुहालका धर्मपत्नी स्व. बंशीलाल जी सुहालका का 16 जून को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकग्रस्त पुत्र अखिलेश, दिनेश पुत्री तरुणा व उनका संपन्न परिवार छोड़ गई हैं। वे अत्यंत धर्मपरायण महिला थी।

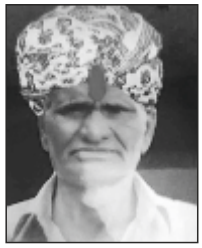

श्री किशन जी डांगी सुखेर का 1 मई को देहांत हो गया। वे अपने पीछे शोकमग्न धर्मपत्नी श्रीमती भंवरीदेवी, पुत्रवधु सरलादेवी-स्व. रोशनलाल, जगदीश, छगनलाल सहित भाई-भतीजों का विशाल परिवार छोड़ गए है।

सूरजपोल बाहर स्थित निरंजनी अखाड़ा हनुमान मंदिर के महंत सुरेशगिरी का 19 जून को देहावसान हो गया। 20 जून को कोविड प्रोटोकोल और संतों की अंतिम क्रिया विधि के अनुसार मंदिर परिसर में ही उन्हें समाधि दी गई। वे पिछले 38 साल से इसी मंदिर में साधनारत थे। वे महंत कन्हैयागिरी और गोकुलगिरी के बाद निरंजनी अखाड़ा मंदिर के तीसरे उत्तराधिकारी बने थे। इसी साल अप्रेल में कुंभ से लौटने के बाद महंतजी में संक्रमण की पुष्टि हुई थी। उनके शिष्य अमरगिरी के अनुसार वे स्वस्थ भी हो गए थे, लेकिन पोस्ट कोविड की परेशानियों के चलते गत 8 जून को उन्हें पुन: एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। उनके निधन पर शहरवासियों ने गहरा दु:ख व्यक्त करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। महंत रासबिहारी शरण, महंत रामचन्द्र दास, महंत हर्षिता दास, रघुवीरसिंह मीणा, डॉ. गिरिजा व्यास, अशोक परिहार, गोपालकृष्ण शर्मा, विष्णु शर्मा 'हितैषी', पंकज शर्मा, गुलाबचंद कटारिया, रवीन्द्र श्रीमाली, दिनेश श्रीमाली, राजेन्द्र पालीवाल, एन. के. शर्मा, नितेश सर्राफ, दुर्गेश मेनारिया सहित बड़ी संख्या में शहरवासियों ने उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए।

# THE UDAIPUR URBAN CO-OPERATIVE BANK LTD.

- UUCB Home Loan Scheme - 8.00%

- UUCB Vehicle Loan Scheme:
  2 wheeler - 9.50%
  4 wheeler - 8.00%

- UUCB Special Small Loan Scheme - 8.65%

- UUCB Business Development Scheme :
  SME - 9.00%
  Mining - 9.50%

- UUCB Special OD for Housing Loan - 8.50%

- UUCB Mortgage Loan Scheme - 10.50%

- UUCB Trade Scheme - 9.50%

- UUCB Personal Loan Scheme - 12.00%

- UUCB Vidhya Education Loan Scheme - 8.00%

Head Office:- 9C-A Madhuban, Ist Floor, Udaipur Rajasthan - 313 004
Ph.: 0294-2560783

# Tapasya Constructions

CIVIL CONTRACTOR & CONSTRUCTION MATERIAL SUPPLIERS:

CEMENT BRICKS & PAVERS BLOCKS, CC ROAD WORK & ALL CONSTRUCTION MATERIALS

64, MANGLAM COMPLEX, SHOUBHAGPURA
UDAIPUR (RAJ.), 313001

KULDEEP DURGAWAT
9772113555,
6350124253

With Best Compliments from
NAHAR
COLOURS & COATING LTD.
Certified ISO 9001 by
BVQi
UKAS
QUALITY MANAGEMENT
NCCL, House, G-1, 90-93, Sukher Industrial Park
Udaipur-313004 INDIA
Tel. : +91-294-2440307-309 | Fax : +91-294-2440310
E-mail : ramesh@naharcolours.net


Paragon
The Mobile Shop
Jio
BlackBerry
mi
INTEX
vivo
oppo
GIONEE SMART PHONE
htc
SAMSUNG
Redmi 1S
honor
lenovo. FOR THOSE WHO DO.
LAVA
SONY
NOKIA Connecting People
MOTOROLA
itel
micromax nothing like anything
and all other mobile trusted brands are available under one roof..
For More Detail Pls Contact
Paragon The Mobile Shop
23, inside Udaipole Udaipur
Contact No. 0294-2383373, 9829556439

# अर्थ

## डायग्नोस्टिक्स

Meaningful Authentic & Dedicated

No. 1

- क्वालिटी में सर्वोत्तम
- HRCT सी.टी. स्केन
- 3-D हाई डेफिनेशन MRI
- सोनोग्राफी (3D/4Dकलर)
- डिजिटल एक्स-रे
- सभी प्रकार की रक्त की जॉचें

4-सी, एपेक्स चेम्बर, भारतीय लोक कला मण्डल के पीछे, मधुबन, उदयपुर

Ph. : 81077-53342, 77259-92990, 74109-70970, 74109-80980

www.arthdiagnostics.com

RK GROUP

घर है मंज़िल, घर है सपना,
हर दिल चाहे एक घर अपना

हिम्मत, ताक़त जिससे आए,
सीमेंट वो वंडर ही कहलाए

जो हर मौसम में साथ निभाए,
भरोसे का प्रतीक कहलाए

राह दिखाए, साथ निभाए,
वंडर सीमेंट,

# जब भी आए भला कर जाए

WONDER CEMENT
EK PERFECT SHURUAAT

Toll-free No.: 1800 31 31 31
www.wondercement.com